वर्ष 28, अंक 02 फ़रवरी-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी

SHABARI SALEM

ज्ञानात् परं सुखम्

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

तमिलनाडु के सेलम जिले से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली, एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है।

सिरुत्तोंडर नायनार, शिव भक्त थे महान ।
शिव की कृपा से पाए, शिव पद जा कैलाश ।।

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi in Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
Second Agraharam, Salem - 636 001.
Visit us at https://shabari.in/

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

वर्ष 28, अंक 02 | मूल्य ₹ 3/- | फ़रवरी - 2026

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414

Office Phone : 9842765414

Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414

0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
जीवन मेरा 7
धक्का................................ 8
आनंद की अनुभूति 10
शिखर 12
जब तक वापस लौटोगी तुम 13
रिश्ता 14
प्रेमानुभूति : राधा कृष्ण 15
वासना 16
कह डालो 17
मृत्यु की यात्रा 18
दोहे.............................. 19
माँ नर्मदा 19
वह मजदूरनी 20
चिंता का उपहार 21
स्वयं का विकल्प 22
स्टेटस की तस्वीरें...! 22
सुदर्शन........................... 23
पत्थर तोड़ देता है 23
युद्ध: दो कविताएँ 24
राह के फूल 25
महान संत शिव भक्त–तमिल नायनमार 28
बेटी : जीवन की अनंत धुन...... 30
हॉर्न बजाना 32
पूर्ण विराम........................ 32
जीत होगी तेरी दमदार............ 33
जनक नंदिनी 33
मेरा देश 34
भोले की ही माया 34
गहरा सच 35
हाइकु 35
सरस्वती वंदना 35
अटल बिहारी वाजपेयी जी को ... 36
सुहानी सुबह 36
खुशबुओं के मेले 37
अकेला रह नहीं पाता 37
गीत 38
विमोहा छन्द 38
गज़ल 39
माँ 39
रुह की पुकार 40
चाहिए 40
बेरोजगार 41
पाठकों के पत्र 41
नवांकुर 42
पठितानि अभिरुचितानि अनूदितानि 45
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026
அக்டோபர்-2026	18-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ **D.D.** ***மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.***

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

फ़रवरी सिर्फ प्यार का महीना नहीं है अब से उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी करनी होगी । परीक्षा के नाम से जो डरा करते हैं वे कभी उचित रूप से उत्तर दे नहीं पाते हैं । कुछ ऐसे भी लोग हैं जो प्रश्न पत्र को देखते ही लगभग बेहोश हो जाते हैं । परीक्षा की तैयारी कुछ छात्रों को सरल बात है लेकिन कई छात्रों को यह एक बहुत ही कठिन कार्य है ।

अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आरंभ से ही तैयार करनेवाले छात्र परीक्षा से नहीं डरते हैं । लेकिन ज्यादातर लड़के परीक्षा के अंतिम क्षण पर तैयारी शुरू करते हैं । उचित रूप से जो समय का उपयोग करते हैं वे विषय को संपूर्ण रूप से समझने और पढ़ने के बाद पुनरावृति करने में भी सफल होते हैं ।

अभिभावक के साथ अध्यापक गण को भी यह बात समझाना चाहिए कि जो डरता है वह कभी कुछ कर नहीं पाता है । मन में कोई डर के बिना, बिना किसी शंका के समय बर्बाद किए बिना जो परीक्षा के लिए तैयारी करता है वह कम से कम परीक्षा में उत्तीर्ण तो जरूर हो जाता है । साथ देकर सफल बनाना हर किसी का कर्तव्य है ।

विषय को समझ कर गहन अध्ययन करनेवाले छात्र हर सवाल का उत्तर आराम से कर पाते हैं । कुछ ऐसे छात्र हैं जो पूरी तैयारी नहीं कर पाते हैं । उनको सहपाठी की सहायता की आवश्यकता होती है । ऐसे विद्यार्थियों को अभिभावक के प्यार और मार्गदर्शन की बहुत जरूरत होती है । अध्यापक की प्रेरणा विषय को आसान बनाने के साथ-साथ छात्रों के आत्मविश्वास को भी बढ़ा देगा । हरेक की शिक्षा समाज तथा देश की प्रगति के लिए अत्यंत जरूरी है । व्यक्ति के विकास से समाज का विकास और समाज के विकास से देश का विकास हम संपन्न कर पाएँगे ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

अनमोल वचन

खुलकर बोलना

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – हमारे प्यार के बारे में अनेक लोग अनेकानेक बातें कहा करते हैं । हमारे प्यार के बारे में भला बुरा कहते हैं । दोषी ठहराते हैं । उनके ऐसे बोलने से हमारा प्यार मजबूत हो जाता है । लोग इसे जानते नहीं ।

फूलों सी आँखेंवाली मेरी प्रियतमा से मिलने का मौका मुझे नहीं मिलता । इसे जाने बिना हम दोनों के बारे में बात करके हमारे बीच में प्यार जगा दिये मेरे परिसर के लोग ।

अच्छा हुआ कि हमारे बीच के प्यार के बारे में लोग खुलकर बोलने लगे । इससे हमारा प्यार बढने लगा तथा विवाह तक पहुँच गया ।

लोगों के हमारे बारे में बोलने से हमारा प्यार बढने लगा । अगर ये लोग हमारे प्यार के बारे में खुलकर कुछ नहीं बोलते तो वह इतना नहीं बढता ।

प्यार जब लोगों से खुलकर बोला जाता है तब वह मीठा लगने लगता है । जिस प्रकार पियक्कड के ताडी या कुछ और पीने से उसको और चाहने लगता है वैसे ही लोगों से बोले जाने पर हमारा प्यार बढता रहता है ।

हम एक दूसरे से बहुत कम समय के लिए ही मिले । लेकिन जब लोग हमारे प्यार के बारे में बोलने लगे तब वह चंद्र ग्रहण के समान हर कहीं फैल गया ।

यहाँ की सारी नारियों की बोली हमारे प्यार के लिए खाद बनेगा । मेरी माता जब रोकती है वह पानी बनेगा और हमारा प्यार निरंतर बढता रहेगा ।

यहाँ के लोगों का हमारे प्यार के बारे में बोलते रहना और हमारे प्यार को मिटाने की बता कहना घी डालकर आग को बुझाने के समान है ।

मैं कभी तुमसे दूर नहीं जाऊँगा । वादा करके जो मुझसे दूर गये तब लोगों की बोली से या बोलने से मैं क्यों लज्जा करूँ ?

लोग मैं जिससे प्यार करती हूँ । उनको मुझसे मिलाकर हमारे बारे में बहुत कुछ बोलते हैं । अगर वे मुझसे प्यार करते तो जब मैं चाहूँगी तब मुझसे वे विवाह करेंगे ।

जीवन मेरा

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

ना किसी पर आधारित हूँ, ना किसी का भार बनना चाहता हूँ
ना कभी किसी से कुछ प्रतीक्षा है, ना कुछ पाने की इच्छा है
नहीं जन्मा हूँ मैं दूसरों पर आधारित रहने के लिए इस धरती पर
नहीं जन्मा हूँ मैं अपने जीवन को इच्छा पर निर्धारित कर खोने को
जीवन मेरा ईश्वर का दिया वरदान है जो भी करता हूँ वह सम्मान है
जीवन मेरा, मेरा अपना है ना इस पर तेरा या किसी का अधिकार है
खोना ना चाहता हूँ ना रोना चाहता हूँ मैं चीजों के पीछे भागते
आकांक्षा निरंतर साथ हो अति तीव्र इच्छा के पीछे ना मेरा हाथ हो ।

खुशी तो खुशी होती है छोटी हो या बड़ी दिल को वह बहलाती है
बड़ी से बड़ी खुशी भी कभी पल में बदल जाती है दिल दुखाती है
खुशी का दास ठहरता है मन तेरा मेरा और हर किसी की दुनिया में
हर पल हर वक्त खुशी से भरा रहा जीवन वह तो नीरस बन जाता है
दुख से तो बहुत दूर भागता है दुख के नाम से मन नित डरता है
दुख नहीं चाहते हो तो दुखाना तुम बंद करो किसी के भी दिल को
दुख से ना सताया जाना चाहते हो तो रोक दो इंतजार को
प्रतीक्षा जब बढ़ती जाती है दुख का वह रास्ता अपने आप खुलता है ।

प्रतीक्षा की पूर्ति जब ना हो पावे तब दिल तेरा जरूर दुखने लगता है
पल–पल के इस जीवन में कल पर कभी कोई भरोसा न करो
टूट जाने से कोई रास्ता नहीं खुलता दिल के बुझ जाने पर कुछ ना बनता
जो है उसमें तुम संतोष उसे सदा अपनाना सीख लो जीत जाओगे
जीवन मेरा जीने के लिए है दुख और प्रतीक्षा को उसमें कभी कोई ना स्थान है
मेरा यह जीवन मुझ पर आधारित है इसमें ना किसी का हाथ है
जीना है मुझे इस इस जीवन को रसमयी बनाना है नित्य इसे सजाना है
जीवन मेरा, मेरा अपना है ना इस पर तेरा या किसी का अधिकार है ।

धक्का

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

हमेशा नहीं होने पर भी कभी-कभी कुछ बातें हृदय को चीर देती हैं । कभी-कभी आँखों में आँसू के बदले खून बहने लगते हैं । मानव जो अपने आप को सर्वशक्तिमान समझकर बहुत कुछ कर बैठता है, दिल से जब हार जाता है तब अपना सब कुछ खो डालता है । हड्डी भले ही मजबूत हो, त्वचा मुलायम ना होकर कठोरतम भी क्यों ना हो मानव मन की भावनाएँ उसे कभी शक्तिमान बना देती है और कभी-कभी बलहीन बनाकर राख भी बना डालती हैं । सब प्रकार से बलवान होने पर भी जब मानव भावोन्मुख हो जाता है तब अपने आप को भूल जाता है ।

नरेश का हाल भी आज ऐसा ही था ।

सालों पहले की बात आज उसे खदेड़ रही थी । जिंदगी में हम सारी बातें को याद नहीं करते हैं । कुछ बातों को भूलना नहीं चाहते हैं तो कुछ बातों की याद कभी करना ही नहीं चाहते । कुछ कर्म ऐसे हो जाते हैं जिसे हमारे लाख प्रयत्न करने पर भी सही नहीं कर पाते हैं । नरेश की भी यह गलती जिसे वह भूल नहीं सकता बिलकुल भूल चुका था । गलती सिर्फ उसकी नहीं थी उसमें किसी और का भी हाथ था । उसे लगता था समय की गति धीरे-धीरे उस बात को बिलकुल उससे दूर कर देगी । लेकिन उसे पता नहीं था कि एक न एक दिन उसको अपने उसे करतूत के लिए अपने आप को निंदा करने का मौका आ ही जाएगा ।

यौवन एक माया जाल है जो मनुष्य को विभिन्न प्रकार के जालों में फंसा देता है । बुढ़ापे में जब वह अपने कामकाज से छूट जाता है तब अपने किए हुए पर पछताता है । रोज की तरह उसे दिन भी वह मंदिर आया हुआ था । दर्शन के बाद आराम से एक कोने पर बैठकर विचारों में खोया हुआ था । तभी वह लड़की उसके पास आई और पूछने लगी । आप नरेश तो नहीं है जो सालों पहले सेलम में रहा करते थे । अपनी जिंदगी को पूर्ण रूप से अपने मन के हिसाब से जी रहे हैं । भगवान करें कि अंत तक आपका जीवन सुखमय बने रहे । नरेश को कुछ मालूम नहीं पड़ा । वह पूछने लगा आप कौन हैं ? झट से उत्तर मिला आपकी बेटी, आपकी पहली पत्नी की बेटी । नरेश कुछ बोल न पाया कि वह आगे कहने लगी... पति-पत्नी के बीच में जो भी लड़ाई हो उसमें हम जैसे बच्चों की क्या कसुर है ? आप अपनी पत्नी से अलग होकर एक नया जीवन प्राप्त कर चुके हैं । लेकिन जिंदगी भर मुझे और मेरे भाई को पिता का प्यार बिलकुल नहीं मिला है

जिसमें हमारी कोई गलती नहीं है । जब दो जन मिलकर किसी नई जान को दुनिया में बुला लेते हैं तो उसके लिए भी जीना सीख लेना चाहिए । हम एक नहीं दो बच्चे थे । आप अपनी नई जिंदगी शुरू करके बीवी बच्चों के साथ जी रहे थे जबकि हम अपने पिता के लिए तरस रहे थे । खैर कोई बात नहीं आप खुश रहें । मैं निकलती हूँ ।

उसके आँखों में से आँसू झलक रहे थे । मुड़कर देखे बिना वह आगे चली गई । नरेश को धक्का लगा । जो भी कह रही है बात सही है दो बच्चों के होने के बाद हम दोनों के बीच में जो लड़ाई हुई थी उससे मुझे उसे छोड़कर सालों बाद किसी दूसरे से शादी करना पड़ा । मेरे अपने बच्चे हैं पत्नी भी साथ में है । लेकिन उन दोनों बच्चों को पिता का प्यार बिलकुल नहीं मिला । उसका प्रमुख कारण मैं भी हूँ । मुझे अपनी जिंदगी उनके लिए कुर्बान करनी थी । लेकिन मैंने कुछ नहीं किया ।

पहली शादी टूट चुकी थी । मेरी पत्नी मेरी बात कभी नहीं मानती थी और बात-बात में लड़ाई किया करती थी । अनेक बार की लड़ाई के बाद मैं उससे दूर जाना चाहा । गुस्से में वह क्या कर देती है वह उसको भी मालूम नहीं होता । इसलिए मैं उससे अलग होना चाहा आखिर कोर्ट से मुझे उससे छुटकारा मिल ही गया ।

मेरी माँ मेरे साथ थी । कुछ साल बिना किसी प्रयास के निकल ही गए । अभी मेरी माँ मरने के पहले मुझे अकेले नहीं छोड़ना चाहती थी । माँ के लिए और स्वयं के लिए मैं दूसरी शादी के लिए तैयार हो चुका था ।

मेरी शादी हो चुकी है और मेरे दो बच्चे हो चुके हैं जो अभी विद्यालय में पढ़ रहे हैं । शादी के बाद कभी मैंने उन बच्चों के बारे में नहीं सोचा । मेरे अंश होने के बावजूद भी मैं उन पर कभी कोई विचार नहीं किया । मैं स्वार्थ ठहर चुका हूँ । जिनके जन्म का कारण मैं था उनके बारे में कभी कुछ सोच नहीं पाया । एक पिता का धर्म मैंने बिलकुल नहीं निभाया । एक बच्चे के हो जाने के बाद लड़ाई के साथ-साथ रिश्ता भी बना रहा है इसलिए दूसरा भी बच्चा हुआ लेकिन दोनों को छोड़कर मैंने जिंदगी का अपना अलग राह अपना लिया । जब बढ़ाने का भार अपना नहीं सकता तो जीवन देने का अधिकार मुझे कैसे प्राप्त हो सकता ? अब पछतावे होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ? नरेश के आँखें नम थीं । दिल बिलकुल बुझ चुका था ।

कहीं दूर से तमिल का वक्त सुप्रसिद्ध गाना सुनाई दे रहा था...

घर तक रिश्ता, गली तक पत्नी, घाट तक रिश्ते अंत तक कौन है अंत तक कौन है ? जीवन क्षणभंगुर है इस जीवन में किसी के दिल दुखाने का अधिकार किसीको बिलकुल नहीं है ।

आनंद की अनुभूति

– श्री. डोली शाह,
हैलाकंदी, असम

सर्दी की सनसनाती हवाएँ, उसमें यदि अलाव दिख जाए तो अनजाने भी दो पल ठहर जाए, और वहाँ यदि चाय की प्याली हो तब तो मानो सोने पर सुहागा हो जाए ।

गोधुलि बेला पार कर चंद्रमा जगत पर अपनी हल्की प्रकाश पहुँचाने के लिए बिलकुल तैयार बैठा था । सारे कामों से निवृत होकर सत्यजीत और मौसमी भी खुले आसमान के नीचे हवाओं को चीरते हुए अलाव का आनंद उठा रहे थे । अचानक अधवृद्ध पड़ोसी पूर्णिया की माँ वैजयंती अलाव देख भागी– दौड़ी पहुँची ।

आज ठंड बहुत ज्यादा है न ? वैजन्ती ने भूमिका बाँधते हुए कहा ।

''हाँ, अगले सप्ताह लोहड़ी है और अब यदि ठंड नहीं होगा, तो आखिर कब होगा ?'' मौसमी ने वैजयंती से कहा ।

''हाँ, सिर हिलाते हुए ।''

''चाय पियोगे क्या ?'' मौसमी ने पूछा ।

''अरे काकी, नेकी और पूछ–पूछ'' वैजयंती ने झट से उत्तर दिया ।

''जा, रसोई घर से ले ले'', मौसमी ने आदेश के तौर पर कहा ।

वह दौड़ी–भागी चाय लेकर पुनः अलावे के पास आ धमकी । वाह, क्या चाय है सचमुच । वैजयंती ने चुस्कियाँ लेते हुए कहा ।

अरे, साधारण–सी चाय है, बस थोड़ी सी अदरक डाली थी मैंने ! मौसमी ने झट कहा ।

''अरे कोई न लेकिन बहुत अच्छी है सचमुच ! मेरे यहाँ तो यह भी नसीब नहीं होता ! कभी चीनी ही नहीं, तो अदरक वगैरा की बात तो छोड़ ही दो । जब से यह शहरी बहू घर आई है, पूरे दिन मोबाइल पर लगी रहती है । रसोई की रौनक तो कहीं गुम सी हो गई है । बस वही चावल–रोटी !

मौसमी चुपचाप मौन हो सुनती रही । उधर सत्यजीत मुख पर उंगली दबाए एक छोटा पौधे को देख मंद–मंद मुस्कुराते रहे, जिसमें कुछ गिने–चुने ही पत्ते मौजूद थे ।

''क्या देखकर अकेले–अकेले मुस्कुराए जा रहे हैं'' मौसमी ने हलके से व्यंग भरे स्वर में कहा ।

नहीं, मैं आप लोगों की बात भी सुन रहा हूँ और सोच भी रहा हूँ । सत्यजीत ने कुछ गंभीरता से कहा ।

''क्या ?'' मौसमी ने उत्सुकता भरे स्वर में पूछा ।

''दो मिनट उस पते को जरा गौर से देखिए, क्या उसे कष्ट नहीं है ? सुबह कोहरे की मार, गीले नयनों से धूप की विनती करना, यहाँ तक की सनसनाती हवाओ के थपेड़े, उनकी रूह तक को हिला देती है । सोचिए उन्हें एक ही दिन में कितने उतार-चढ़ावों का सामना करना पड़ता है, फिर भी ना कोई गिला, न शिकवा ! बिंदास अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।

दोनों स्तब्ध हुए उनकी बातों को सुनते रहे ।

बुरा मानने की बात नहीं है लेकिन क्योंकि उन्हें संतोष है, इसलिए वह खुश है । मगर हम मनुष्यों को... उफ़... !

और चाहिए और चाहिए कि होड़ ने उन्हें बिलकुल निम्न कोटि का बना दिया है । यहाँ तक कि उन्हें कोई भरोसा भी नहीं कि कब यह मनुष्य उन्हें उखाड़ फेके । प्रकृति की मार उन्हें कब उजाड़ दे, फिर भी वह अपने वर्तमान को देखकर हमेशा खुश रहते हैं ।

आप ही लोग सोचो, इस सनसनाती हवाओं के बीच अलावे के पास बैठकर भी क्या तुम्हें इसका सही आनंद आया ? नहीं ना, क्योंकि तुम तो पूरे दिन की ऊँच-नीच के बेकार की घटनाओं में उलझी रही । तुमने इस पल को जीना ही नहीं चाहा । सत्यजीत जी ने समझाते हुए कहा ।

''सही कहा आपने लेकिन... !'' मौसमी ने मंद स्वर में कहा ।

क्या लेकिन...

''अरे यह साहित्यकारों के पास बैठोगी तो वैसे ही पका देंगे !'' मौसमी ने चेहरे पर मुस्कुराहट के साथ कहा ।

वैजयंती के चेहरे पर यह सुनते ही थोड़ी-सी खुशी तो थोड़ा रोष भी उभरा, काकी अब मैं चलती हूँ, अलाव भी खत्म होने को है । भोजन पानी से निवृत्त होकर जल्दी ही सो जाऊँगी ।

हाँ, इतने में तीनों ही अपने-अपने घर की ओर बढ़ गए ।

वैजयंती रात्रि के सन्नाटे में रूई की फाहे की गर्माहट लिए सत्यजीत की बातों को बड़ी ही गंभीरता से सोचती रही । सही कहा उन्होंने, दिन तो बीतता

ही जा रहा है, मैं फालतू की झमेले दिमाग में पालकर अपना वक्त खराब कर रही हूँ । पूरी रात दिमाग के कशमकश में लगी रही । अगली प्रातः से वैजयंती कुछ नहीं बोलती, जो भी सामने भोजन मिल जाता उसे भगवान का आशीर्वाद समझ मौन हो ग्रहण कर लेती । बिलकुल विंदास रहती ! ना किसी से गिला, न किसी से शिकवा । बस अपने में ही बिंदास । अब वैजयंती कभी राह चलते दिखती भी तो बिलकुल बदली, बिंदास सी !

अचानक एक संध्या मौसमी की नजर वैजयंती पर पड़ी । कुछ हाल-चाल भी पूछा । लेकिन उसका बदला रूप, आत्म विश्वास, संतोष से भरा चेहरा देख वह मन ही मन सोचती रही ।

मानना पड़ेगा एक साहित्यकार की ताकत ! आपके एक कथन ने ही वैजयंती का पूरा चरित्र ही बदल दिया । यह सुनते ही सत्यजीत जी आश्चर्य भरे स्वर में

''मतलब'' सत्यजीत जी आश्चर्य भरे स्वर में जानना चाहे ।

मैं वैजयंती की बात कर रही हूँ । मौसमी ने मुस्कुरा कर कहा ।

यह सुनते ही सत्यजीत जी भी जोर से मुस्कुरा दिए ।

शिखर

– श्री. जी. श्रीदेवी,
तिरुच्चि, तमिलनाडु

जिस भूमि में हम पैदा हुए वही हमारी मातृभूमि है । इसका चरित्र महान है । माता-पिता गुरु ने सीढी बनाकर हमें चढने का रास्ता दिखाते हैं । भाषा अमृत समान है । कलम से लिखना, ज्ञान पाना, भक्ति, सत्संगति ये सब का ज्ञान ये सब का शुरुवात यही होता है, तब हमको लगता है भक्ति और भगवान अलग नहीं ज्ञान का मार्ग खुलने की प्रेरणा देनेवाली शक्ति **शबरी शब्द सागर** में तैरने का आरंभ करो । ॐ कार शिखर पर चढकर ज्ञान फैलाओ ।

जब तक वापस लौटोगी तुम

– श्री. अशोक सिंह,
दुमका, झारखंड

जब तक वापस लौटोगी तुम जब तक वापस लौटोगी तुम वसंत जा चुका होगा जीवन से गाते–गाते हो चुकी होगी शाम... रेत पर लिखा तुम्हारा नाम मिटा चुकी होगी बारिश टूट चुके होंगे गिटार के तार भूल चुकी होगी तुम भी गीतों के बोल आखिरी ट्रेन भी जा चुकी होगी तुम्हारे शहर की सुनसान सड़कों के किनारे खड़े सारे के सारे लैम्पपोस्ट बुझ चुके होंगे रात भर जलकर तुम्हारे लौटने की प्रतीक्षा करते–करते मेरी जेब के पर्स में लगी तुम्हारी तस्वीर का रंग भी हो चुका होगा फीका और उदास

सारे के सारे प्रेम–पत्र भी पढ़ चुके होंगे पीले कलम की स्याही सूख चुकी होगी खत्म हो चुके होंगे डायरी के सब पन्ने आत्मकथा लिखते–लिखते ।

जीवन में पतझड़

पेड़ों की जड़ों के आसपास सूख चुकी है नमी पीलापन छाने लगा है मन की हरियाली पर पत्ते पीले होकर झड़ रहे हैं धीरे–धीरे... और उसके साथ–साथ झड़ रही हैं पीली पड़ती स्मृतियाँ... सूरज डूब रहा है धीरे–धीरे... समय की ढलान पर पेड़ों की झुरमुटों के पीछे की साँझ में और उसके साथ–साथ डूब रही हैं पेड़ों की परछाइयाँ... जब तक पेड़ों की जड़ों में लौटेगी नमी

लौटेगा वसंत लौटेंगे फलने–फूलने दिन स्मृतियों में आएगी हरियाली जब तक लौटकर आएगी सोन चिरैया अपना घोंसला ढूँढने पता नहीं तब तक पेड़ टिके भी रहेंगे धरती पर आँधी–तूफान में या फिर हो जाएँगे धराशायी पता नहीं !

पीले पड़ते प्रेम–पत्र जैसे–जैसे उधर पड़ते जा रहे हैं पीले तुम्हारे पास रखे मेरे प्रेम–पत्र वैसे–वैसे इधर आने लगी है मेरे बालों में सफेदी जैसे–जैसे उधर धुंधली पड़ती जा रही है उसकी लिखावट वैसे–वैसे इधर धुंधलाने लगी हैं मेरी स्मृतियाँ जैसे–जैसे उधर टूटने लगे हैं उसके तह वैसे–वैसे इधर टूटने लगा हूँ अंदर से मैं भी... जब तक वे बचे रहेंगे तुम्हारे पास शायद तब तक मैं भी बचा रहूँ इस धरती पर !

रिश्ता

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

जिन गलियों में बचपन बीता, उनकी बात निराली है,
लुकाछिपी आइस पाइस, खेलों की बात निराली है ।
सारा गाँव एक हवेली, सबसे रिश्ते नाते होते,
रिश्तों में अपनापन गहराता, गाँव की बात निराली है ।

आज तलक भी वह रिश्ते नाते, सारे हमको याद हैं,
घेर वाली नानी के घर, मक्खन की बात निराली है ।
झोटा बुग्गी साही सवारी, कभी ऊँट गाड़ी होती थी,
रोज़ खेत जा रहट पर नहाना, यादों में बात निराली है ।

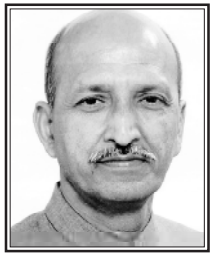

आओ हम गाँव चलें, बरगद की ठाँव चलें ।
चौपाल में जाकर बैठें, बैलों के साथ चलें ।
बुजुर्गों की बात सुनें, नया तजुर्बा वहाँ चुनें,
संस्कार वहाँ मिलते, आओ हम गाँव चलें ।

चौपाल में खाटें बिछती, मूढे–मूढी साथ में सजती,
गली गाँव के सारे झगडे, समस्याओं पर राय बनती ।
फसल कौनसी किस मौसम में, कैसे पैदावार बढे,
समृद्ध गाँव स्वस्थ रहें जन, पशुओं की चर्चाएँ चलती ।

हम सब खेत खलिहान चलें, मेढ मचान चलें
रहट का गीत सुनें हम, आओ सब गाँव चले ।
गाँव होता एक हवेली, रिश्ते नाते सखी सहेली,
सबको अपनी ठाँव मिले, आओ सब गाँव चलें ।

आज भी चूल्हा जलता है, रिश्तों में प्यार छलकता है,
मक्का रोटी– साग हाँडी का, आओ सब गाँव चलें ।
दही छाछ मक्खन की मौजें, उरद की दाल को घोटें,
हारे का दूध हो और ताजा गुड, आओ हम गाँव चलें ।

राम राम सब करते, खेत में काम सब करते,

नीम छाँव तले खटिया, पुरखों के गाँव चलें ।
पक्षियों का कलरव होता रोज़ ही उत्सव होता,
नफरत छोड गले मिलें, आओ सब गाँव चलें ।

नहीं पता जाति धर्म क्या, भेद अमीरी का न जाना,
प्यार भरा सब रिश्तों में, रिश्तों की बात निराली है ।
सम्मान बड़ों का होता, जात पात की बात नहीं है,
गाँव में मेहमान सभी का, मान की बात निराली है ।

प्रेमानुभूति : राधा कृष्ण

– श्री. अमित
पाठक शाकद्वीपी,
बोकारो, झारखण्ड

श्री राधे में खो गए मोहन कुंज बिहारी,
ज्यों है देखो प्रेम मग्न उनकी राधा प्यारी ।
अद्भुत शोभा है तन मन की लीला कितनी न्यारी,
राधा के रंग-रंग से गए हैं माधव कृष्ण मुरारी ।।

प्रेममयी यह भाव भंगिमा, दिव्य मृदुल मुस्कान,
हाथ लिए एक वेणु से प्रभु जी छेड़े तान ।
चंद्र सरिस श्री राधिका मेघ सरिस भगवान,
एक दूजे में रमे हुए हैं, एक दूजे के प्राण ।।

कानों में कुंडल झलकाया, मस्तक पर है चंदन,
एक टक नैना देखें तुझको मौन भाव से वंदन ।
राधिका के तन पर भी ये दिव्य वस्त्र आगराए,
पाकर स्पर्श हवा के ये कुंतल नागिन सी बलखाए ।।

हरी हरी ये चूड़ियाँ हरि में खोती जाए,
जब जब श्याम निहारे इनको राधे भी हर्षाए,
मांग टिका भी स्वर्णिम और बिंदी सजी लीलार,
दिव्य प्रीत की अनुभूति अनुपम इनका प्यार ।

अमित तेरी ये लेखनी चाहे जितना चाहे,
किन्तु अलौकिक प्रेम को शब्दों में कैसे सजाए ।
मैं मतिहीन लिखूँ वही, जितना मुझको आए,
क्षमा करना श्री राधिके, कोई चूक अगर हो जाए ।

वासना

– श्री. अनंग पाल सिंह भदौरिया 'अनंग',
ग्वालियर, म.प्र.

वासना हो, कामना हो, भीख मंगवाती ।
आँसुओं को आँख में, करती जमा जाती ।।
बीज कांटों के हृदय में, वासना बोती ।
है महादुख वासना, ये तृप्त कब होती ।।
मगर है उपयोग भी, झकझोरने आती ।
वासना हो, कामना हो, भीख मंगवाती ।। 1 ।।

झंझोड़े, दुख, कष्ट दे, अंधड़ चलाए जब ।
समझलोगे वासना के खेलको यदि तब ।।
तो हमारी बिगड़ती, हर बात बन जाती ।
वासना हो, कामना हो, भीख मंगवाती ।। 2 ।।
वासना के रूप को यदि, जान जाओगे ।
माँगने की प्रवृतिको, खुद ही मिटाओगे ।।
नहीं मिलता माँगने से, व्यर्थ दौड़ाती ।
वासना हो, कामना हो भीख मंगवाती ।। 3 ।।

छूट जाए प्रार्थना, माँगें चलीं जाएँ ।
तोड़ भिक्षापात्र दो, निधियाँ चलीं आएँ ।।
माँगकर या दौड़कर, किसको मिली थाती ।
वासना हो, कामना हो, भीख मंगवाती ।। 4 ।।
दौड़ है, संघर्ष, भागम–भाग है लेकिन ।
कहाँ है संतोष, तृष्णा बढ़ रही दिन–दिन ।।
स्वप्न या भ्रम टूट जाते, तब समझ आती ।
वासना हो, कामना हो, भीख मंगवाती ।। 5 ।।

कह डालो

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

अपने छुपे हुए जज़्बात यदि जरूरी समझो
तो बेझिझक बाहर निकालो,
दबा कर न रखो अंदर
घुटन से अच्छा है जो कहना है कह डालो,
कहने से शायद मन हल्का हो जाये,
सामने से हो सके सकारात्मक प्रतिक्रिया आये,
बड़े से बड़े समस्याओं का हल
मिलजुलकर निकाला जाता है,
मुश्किल हालातों को संभाला जाता है,
किसी के भी प्रति जलन, ईर्ष्या न पालो,
घुटन से अच्छा है जो कहना है कह डालो,
अपनों द्वारा अपनों को छलते देखा है,
चरागों से ही आशियाना जलते देखा है,
जुल्म और ज्यादतियाँ न सहो,
प्रतिकार के दो शब्द जरूर कहो,
अलग थलग रहने से कोई फायदा नहीं,
जीवन जीने का ये कोई कायदा नहीं,
वक्त आये तो जो जिस भाषा में समझे
उसे सुनाना जरूरी है वही भाषा,
यदि पाखंड में फंसे हो तो क्या इसरो, क्या नासा,
देश को संभालना है तो तरीके से संभालो,
ओछी हरकतों से जनाजा न निकालो,
अपने छुपे हुए जज्बात यदि जरूरी समझो
तो बेझिझक बाहर निकालो,
दबाकर न रखो अंदर
घुटन से अच्छा है जो कहना है कह डालो ।

मृत्यु की यात्रा

– श्री. मनीष उपाध्याय,
नेहू, शिलांग

मृत्यु की यात्रा भी कितनी
अजीब होती हैं ?
रहस्य से भरी हुई इसके कई प्रश्न होते हैं,
ले जाती है मन को एक अलग
सी दुनिया में,
क्या तुमको उसके सही पते का भान है ?
मुझे भी उसका सही पता बताओ ना,
मृत्यु के उपरांत हल होती समस्याओं को समझाओ ना,
मुझे भी उत्कंठा है नचिकेता के
जैसे सभी प्रश्नों को जानने का,
मैं भी देखना चाहता हूँ उस समय से अब तक के दंड विधान का नियम,
देखना चाहता हूँ मैं भी सदेह मृत्यु के विधान को,
देखना चाहता हूँ यमराज के यमपाश को,
क्या वो भी सभी के साथ उचित न्याय करता है ?
क्या यमराज की भी न्याय में
आँखे फड़कती हैं ?
पूछना चाहता हूँ मैं कई और प्रश्न
उस मृत्यु के देवता से,
क्यों छीन लेता है जवान से बेटे
को बुढ़ापे में ?
क्यों दिखता नहीं उसे सुहागन की हल्दी, बिंदी और सिंदूर ?
क्यों करता है निराश उस बेबस
माँ को,
कई और भी प्रश्न है मेरे जेहन में,
आप भी थक कर इस्तीफा दे देंगे, पृथ्वीलोक के घेरे में ।

दोहे

– श्री. सीताराम गुप्ता,
दिल्ली

बच्चों सा निश्छल अगर हो अपना व्यवहार,
प्रेम-प्यार की हर समय हों हम पर बौछार ।
जब जीवन की नाव पर लदता ज़्यादा भार,
रहती डावाँडोल वो नहीं पहुँचती पार ।
धन दौलत को देखकर गढ़ते जो अनुबंध,
होते फ़ौरन ही वहाँ तार-तार संबंध ।
सुख-दुख मान-अपमान हो नफ़रत-पीड़ा प्यार,
आता है सब लौटकर देते जो हर बार ।
जीवन-झरने से अगर सुनना है संगीत,
राग-द्वेष का आयतन कम कर दे तू मीत ।
अच्छे रिश्तों के लिए रखना इतना ध्यान,
इक दूजे को दीजिए, पूरा पूरा स्थान ।
संबंधों को चाहिए, देखभाल की खाद,
उदासीनता से सदा होते ये बरबाद ।
संबंधों के बीच में जो आ गई दरार,
बिना गँवाए ही समय उसको करिए पार ।
संबंधों की नींव को मत कर तू कमज़ोर,
जो कहना चुपचाप कह बिना मचाए शोर ।
योगदान की सभी के चर्चा कर दिल खोल,
अच्छे रिश्तों के लिए, मीठे-मीठे बोल ।
मित्रों से जो भूल हो मत दो उनको तूल,
योगदान उनका सदा मन से करो कबूल ।
छोटी-मोटी गलतियाँ करो नज़रअंदाज़,
कोई भी इससे नहीं होता है नाराज़ ।
घर में तेरे साथ जो रख उनका तू ध्यान,
उजड़ गया घर बार तो है बेकार मकान ।
मिला आपका साथ जो प्रेम प्यार विश्वास,
मुझको तो आने लगा जीवन अब कुछ रास ।

माँ नर्मदा

– श्री. प्रज्ञा सुमेध
जायसवाल,
सोहागपुर, म.प्र.

अमरकण्टक से निकली माँ,
चीर कर पर्वत पाषाण को,
मैदानों में सिंचित करतीं,
सागौन कही शाल पलाश को ।
जीवन दयनीय पतित पावनी,
मन भावन करतीं अमृत धारा,
कल-कल चंचल रेवा बहती,
हर्षित हो ती ये वसुंधरा ।
दुखियारों के दुःख दूर करती,
मनवांछित फल देती सब को,
दर्शन मात्र पाप धुल जाते,
कष्टों को हर लेती सब के ।

वह मजदूरनी

– डॉ. सुरंगमा यादव,
लखनऊ, उ.प्र.

अभी है इसमें मज़दूरों की आवाजाही
क्योंकि अभी है ये निर्माणाधीन इमारत
बाँस की बल्लियों में बँधी पालनेनुमा धोती
उसी में सोया है मजदूरनी का नौनिहाल
उसके सिर पर है ईंटों का भार
मन में ममता भरी है अपार
दूर से ही लुटाती है बार-बार
सीढ़ियों पर चढ़ जाती है तेज रफ्तार
पसीना बहाने में है उसको महारत
अभी कुछ दिन पहले ही जना है लाल
देह भी अपनी अभी नहीं पाई है सँभाल
पर क्या कहे पापी पेट का हाल
ठेकेदार की नजरों की सहती है शरारत
सांवला मुखड़ा मगर सलोना है
बड़ी-बड़ी आँखों में दो जून की रोटी का रोना है
नियति, ईंट-गारा और बालू ही ढोना है
वो भला क्या जाने क्या होती है नजाकत
मटमैली धोती और ब्लाउज है देह पर
मर्दाना कमीज़ भी पहनी है उसके ऊपर
सकुचाती है छोटे कपड़ेवालियों को देखकर
बार-बार देखती है कब होगी दोपहर
बच्चे को गोद में लेकर भूल जाती है दुनिया की आफ़त ।
वह मजदूरनी ।

हर कर्म पर ध्यान दिया करो,
हर कर्म का फल होता है ।
सत्कर्म उपहार देते हैं जबकि दुष्कर्म दंड देते हैं ।

चिंता का उपहार

– डॉ. परमानन्द लाभ,
समस्तीपुर, बिहार

मैं बदहवास
अभी–अभी लौटा हूँ अपने गाँव
हँसता–मुस्कुराता गम लिए,
अखबार हाथ में लिए
और रंग–बिरंगे नजारे आँखों में ।
ठकठकाता हूँ किवाड़,
लगाता हूँ आवाज,
जोर–जोर से कहता हूँ चिल्लाकर–
होनेवाली है दुर्घटना,
विनाश
और परमाणु–वार ।
हो रहे हैं दंगे–फसाद,
मार रहे हैं लोग
और मर रहे हैं लोग ।
कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक के
किस्से सुनाता हूँ,
नरेंद्र मोदी से लेकर
समझाता हूँ–
राहुल–अखिलेश–ममता–नितीश के
इरादे;
सुनामी का कहर,
छेद ओजोन परत में
सब बताता हूँ ।
लेकिन, यह क्या ?
मेरी सलामती की प्रार्थना
किये जा रही है मेरी बूढ़ी माँ,
कब्र में पाँव लटकाए मेरे पिता
मेरी खुशहाली की दुआएँ दिए जा रहे
हैं;
सिकुड़ते चाम के बीच
फुदकती मेरी फुलझड़ी भाभी
तल रही है पकवान,
मेरा हमउम्र नन्दन नौकर
दरवाजे की गंदगी साफ किए जा रहा
है,
मेरा बटेदार महिन्दर झबही में दूध
लिए खड़ा है,
भैया राम–रट लगाए जा रहे हैं,
बच्चे खेलने में मशगूल हैं ।
और मैं शहरी बाबू ?
मैं शहरी बाबू कितना चिंतित हूँ
अकारण सबके लिए ?
आखिर शहर ने उपहार में चिंता
मुझे जो दिया है ।।

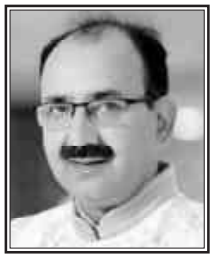

स्वयं का विकल्प

– डॉ. ओंकार त्रिपाठी,
दिल्ली

स्वप्न की सुराही में
कैद किए कल्प।
आदमी ने ढूँढ लिया
स्वयं का विकल्प ।

कृत्रिम प्रज्ञ अंकुरण हुआ
आँगन में स्वप्न युग खिले ।
यंत्र तंत्र मंत्र सहोदर
गलबहियाँ डाल कर मिले ।

तर्कों के इन्द्रधनुष
बुन रहे हैं जल्प ।
आदमी ने ढूँढ लिया
स्वयं का विकल्प ।

प्राणहीन मेधा की होड़
दौड़ रहा विश्व जिस तरह ।
लगता है यंत्र ले रहा
सचमुच इंसान की जगह ।

स्वयं के विनाश का
यह कैसा संकल्प ।
आदमी ने ढूँढ लिया
स्वयं का विकल्प ।

आयस में प्राण प्रतिष्ठा
कर रहे हैं देश आजकल ।
गर्भ में समय के पल रहा
जाने कैसा भविष्य-फल ।

सोच खौफनाक है
बड़ी कहूँ या अल्प ।
आदमी ने ढूँढ लिया
स्वयं का विकल्प ।

स्टेटस की तस्वीरें...!

– श्री. संजय एम. तराणेकर,
इन्दौर, म.प्र.

बहुत कुछ बोलती हैं स्टेटस की तस्वीरें,
नहीं है जुबान उनकी खेंच देती लकीरें ।
वो अनजाने ही खूब खोल देती है पोल,
बिना आवाज के ही बजा देती है ढोल ।

कौन हैं अपना और कौन हैं यहाँ पराया,
तस्वीरों में देखकर ही 'नजरों' में धराया ।
आज अभी तक था 'दिल' में ही समाया,
सोचता हूँ मैंने क्यों ! बेवजह प्रेम बहाया ।

क्यों ? ऐसे रिश्तों के लिए 'शीश' नवाया,
आखिर में अपना लहू बेगाना कहलाया ।
पता नहीं कहाँ से कौन 'खंजर' ले आया,
ये प्यार का समुंदर सुखी नदी में नहाया ।

सुदर्शन

– श्री. राजेश पाठक,
गिरिडीह, झारखंड

अब लगा सुदर्शन को भी यह,
हो कैसे अर्जुन की ही जय ।
रण हो तो कौरब का हो क्षय,
दिनकर पर आये भले वलय ।
पर वलय नहीं यह स्थायी,
हो जाती इसकी भरपाई ।
क्षय होगा अब जब कौरब का,
हर शय होगा तब सौरभ का ।
क्यों पड़ा धनुर्धर माया में,
विकराल काल की छाया में ।
शत्रु भी मित्र नज़र आये,
चाहूँ कि राहु गुज़र जाये ।
पर नहीं गुजरता है राहु,
फैलाता जाता है बाहु ।
अपनी बाहु में भर लेता,
ओझल नजरों से कर देता ।
वह बात मेरी न सुन पाता,
सुनकर भी ना वह गुन पाता ।
ऐरावत भी चिंघाड़ रहे,
रण करने को तैयार रहे ।
जो बना आज कौरब का दल,
वह रहा उगलता आज अनल ।
मैं चाह रहा अग्नि बुझती,
सद्‌बुद्धि अर्जुन में दिखती ।
अब भी अर्जुन ना मान रहा,
सच क्या है यह ना जान रहा ।
सच यही, समय है शक्तिमान,
ना कोई है इसके समान ।
अब समय भी देखो बीत रहा,
लग रहा कि कौरब जीत रहा...

पत्थर तोड़ देता है

– श्री. राजेश पाठक, गिरिडीह, झारखंड

है शीशा गर तरीके का
वो पत्थर तोड़ देता है
यहाँ जो रंग पकिया है
वो अक्सर छोड़ देता है
है कितना भाग्यशाली वह
जिसे होता है इक साथी
हवा का रूख जिधर चाहे
वो मिलकर मोड़ देता है
थोड़ी सी वेदना, दुःख भी
अगर मिल ही गये तो क्या
संभल कर सीख ले चलना
तो ईश्वर और देता है
है इतना भी नहीं कुछ कि
बचाकर भर भी ले गुल्लक
पड़ा बेकार है गुल्लक
वो कहकर फोड़ देता है...

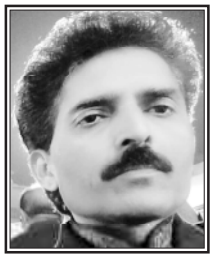

युद्धः दो कविताएँ

– श्री. सुबोध श्रीवास्तव, कानपुर, उ.प्र.

बच्चा और युद्ध

चारों तरफ छिड़ी हुई है
जंग/तबाह हो रहे हैं
शहर–दर–शहर
मारे जा रहे हैं अनगिनत
बेकसूर नागरिक ।
घरों में कैद हैं/डरे–सहमे लोग
खिड़कियों से झांक रहा है
बच्चा/देख रहा है
कोहराम मचाते
बम–मिसाइलों को
वह नहीं जानता कि
आखिर, क्यों हो रहा है युद्ध ?
डरा–सहमा बच्चा
माँ–बाप से ज़िद करता है
बारी–बारी कि रोक दो
ये सारा विध्वंस,
क्योंकि वह दुनिया में
सबसे ताकतवर समझता है
माँ–बाप को–
उम्मीद है उसे/वे रुकवा सकते हैं
युद्ध/जैसे रोक देते हैं
आसानी से घर के झगड़े
कर लेते हैं हल
बड़ी से बड़ी समस्याएँ,
बच्चे की बार–बार ज़िद पर
लाचारी से ख़ामोश हैं
माँ–बाप/नम हो जाती हैं
उनकी आँखें
कैसे बताएँ वे बच्चे को कि
धरती के तथाकथित
'ईश्वरों' के बीच है युद्ध
जो नहीं समझते
प्यार–मानवता की भाषा,
वह जानते हैं तो सिर्फ और सिर्फ
ताकत की भाषा
चाहते हैं सिर्फ–
वर्चस्व, विस्तार और प्रभुत्व !

इसलिए जारी रहेगा युद्ध !

अभी जारी है युद्ध
जारी ही रहेगा
जब तक
नहीं होगी पूरी तरह
उनके अहम की तुष्टि !
युद्ध
शांत हो भी कैसे सकता है
तब तक–
जब तक पूरी तरह
लहूलुहान न हो जाये
मानवता,
विध्वंस न हो जाये
इस समूची
खूबसूरत दुनिया का
और कायम न हो जाए
उनका वर्चस्व ।
उन्हें/बहुत प्रिय है युद्ध
उतना–
जितना नहीं प्रिय है

मासूम बच्चों की
बिंदास खिलखिलाहट,
सांस लेते/चैन से
सोते-जागते शहर,
और बेखौफ-सी
मानवता ।
वे जारी रखेंगे/युद्ध
क्योंकि/वे जारी रखना चाहते हैं
जीवन के खिलाफ
अपनी मदमाती
कुटिल मुहिम
नहीं पसंद है उन्हें
मुस्कुराते मनुष्य
और/जीवंत
घर-मोहल्ले-शहर,
क्योंकि-
अपनी अलग दुनिया है उनकी
जहाँ, नहीं बोली जाती
प्रेम की भाषा,
सबसे प्रिय है उन्हें
उनका अहम
और वर्चस्व की अभिलाषा
जो नहीं देखती
भला-बुरा/सही-गलत ।
सुनो ! उन्हें शांत करना ही है
अहम/चाहिए सिर्फ
दबदबा/जयकार
इसलिए युद्ध और विनाश
करते रहेंगे वे/अनवरत
है कोई रोकनेवाला उन्हें ?

राह के फूल

- कैप्टन डॉ. जय
महलवाल (अनजान),
बिलासपुर, हि.प्र.

राह के फूल जब-जब खिलते हैं ।
हर पथ पर, हर दिशा में अपने मिलते हैं ।
इतनी सुंदर सुगंध चारों ओर फैलाते हैं ।
हम सबके जीवन को प्रेरणा से भर देते हैं ।
सोचो कठिनाइयों के बीच भी ।
कैसे-कैसे खिल जाते हैं ये फूल ।
सबको देते हैं एक प्रेरणादायक संदेश ।
जीवन को सस्ता समझने की मत करो भूल ।

राह के फूल हम सबको सिखाते हैं ।
जीवन की राह में निरंतर आगे बढ़ना ।
अपने लक्ष्य पर रखो अपना अचूक निशाना ।
उदास न हो कभी भी, हर कदम पर है मुस्कुराना ।
जीवन की इस दुख-सुख की यात्रा में ।
एक बात राह के फूलों से जरूर सीखो ।
फूलों की तरह खिलना और महकना है ।
सबके दिल में अपनेपन वाली जगह बनाना है ।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, இரண்டாவது அக்ரஹாரம்,
சேலம்-636001. & 0427-4265414 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் https://shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகக் கட்டண விவரம் :

புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00

புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை
வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

புத்தகக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

புத்தகக் கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

வாணிவிகாஸ் தேர்வுகளுக்கு (ஜனவரி [அ] ஏப்ரல் [அ] ஜூலை [அ] அக்டோபர் மாதங்களுக்கான தேர்வுகளுக்கு) குறைந்தபட்சம் ஒரு முகவரி (சபரி IDயில்) 10 மாணவர்கள் இருந்தால் மட்டுமே விண்ணப்பங்கள் ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

सिरुत्तोंड नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

नरसिंह पल्लव के सेनापति रहे महापराक्रमी महावीर रहे
कावेरी देश में तिरुचेंगोटंगुड़ी प्रदेश के मामात्र कुल के रहे
दूसरे पुलिकेसी पर वार करके उसे हरे महान जीत अपनाये
बहुत कुछ जीत कर बड़े-बड़े धन के साथ वापस ये आए
घोड़े हाथी सहित बहुत कुछ अपने शत्रु के देश से ये ले आए
अपनी सेनापति की वीरता देखकर नरसिंह पल्लव बहुत खुश हुए
सेनापति को शिव भक्त जानकर राजा बहुत गदगद हुए
राज्य की सेवा खुद करने को तैयार हो शिव सेवा के लिए उनको भेजें ।

बहुत धन-धान्य देखकर शिव सेवा में लगने को कहा महाराजा
राजाज्ञा को मानकर अपने गाँव आए गणपतीश्वर मंदिर में शिव सेवा करने
बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे सेनापति वीरता के भी प्रतीक थे
शस्त्र चलाने के साथ शास्त्रों में भी यह महान थे चिकित्सक भी थे
तिरुवेंकाडू की कन्या से शादी कर गृहस्थ जीवन अपनाए
पति की बात मानना पत्नी का धर्म है पत्नी भी साथ देने लगी शिव सेवा में
रोज हर रोज शिव भक्त के खोज में जाते मिलने पर घर लाते
शिव भक्त की भूख मीठा कर अपने आप को दोनों धन्य पाते ।

शिव मंदिर की सेवा शिव भक्तों की सेवा रोज का काम था
संपूर्ण मन से शिव की भक्ति करते हुए भक्त की सेवा प्रधान था
पाँच साल का एक बच्चा था माता-पिता जैसे शिव भक्त था
सारे सद्गुण अपना कर शिव का वह भी पूजन करता था

भक्त प्रिय महादेव जब भक्त की परीक्षा करना चाहते हैं
कभी-कभी वे खुद भक्त के पास आ ही जाते हैं जग में
रूप अपना बदलकर संत रूप अपनाये महादेव खुद आए
सीधे घर के द्वार आकर नाम लेकर नायनार को पुकारे ।।

नायनार बाहर गए थे किसी शिव भक्त की खोज में उन्हें घर लाने खिलाने
पत्नी उनकी बाहर आई शिव जी को सविनम्र अंदर बुलाई
अंदर आने को तैयार नहीं हुए नायनार की प्रतीक्षा की बात की
पेड़ के नीचे बैठ जाने इंतजार करने की बात कह कर चले गए
कहीं किसी के नहीं मिलने पर उदास होकर नायनार वापस घर आए
पत्नी ने सब बातें सुनाई जाकर उनको बुला लाने की बात कही
प्रसन्नचित होकर आगे बढ़े नायनार जाकर उस मुनी से वे मिले
पेड़ के नीचे बैठे उसे मुनी से मिलकर घर आने की विनती की ।

हमको घर ले जाना हमें अपने प्रिय भोजन खिलाना तेरे वश में नहीं
हमें जो खाना चाहिए वह तुम कभी देख भी नहीं सकते हो
आप जो भी कहें जैसे भी कहें वैसा खाना खिलाऊँगा ना उदास होने दूँगा
आप अपने मन की बात अपनी रुचि हमें बताएँ अभी के अभी
पाँच साल का एक बच्चा जो सब प्रकार से उत्तम हो
उसका माँस हमें चाहिए और जैसे हम सोचते वैसे ही चाहिए
उसकी माँ को पूरे मन से उसे लड़के को पकड़ लेना चाहिए
उसी के पिता बिना शोक के लड़के के गले काटना चाहिए ।

कहीं और पूछने से कोई मतलब नहीं कोई माता-पिता ऐसे करनेवाले नहीं
अपने ही पुत्र को बलि देने को तैयार हो गए हैं उसे खूब सजा ये
पत्नी ने पकड़ लिया अपने पुत्र को पिता ने उसका गला काटा
पका कर जब खाना तैयार हो गया नायनार जाकर उस मुनि को ले आए
खाना खाने जब बैठ गए तब उसे मुनि ने कहा बच्चे को बुलाओ तभी खाऊँगा
दोनों ने बात मानकर बच्चों को बुलाया बच्चा दौड़ते हुए आया
बाहर जब आए तब आए भोलेनाथ उमा और कार्तिकेय सहित
अपने साथ ले गए नायनार को पत्नी और पुत्र के साथ कैलाश तक ।

सिरुत्तोंडर नायनार, शिव भक्त थे महान ।
शिव की कृपा से पाए, शिव पद जा कैलाश ।।

बेटी : जीवन की अनंत धुन

– श्री. रूपेश कुमार,
चैनपुर, बिहार

घर की दहलीज़ पर
जैसे ही पहली किलकारी गूँजी,
माँ की आँखों में सुबह खिल आई
और पिता की हथेलियों पर
मानो कोई फूल उतर आया ।
नन्ही–सी वो पुकार
ईश्वर की दुआ थी –
जीवन की धुन का
पहला मीठा सुर थी वो ।

बचपन में उसकी पायलें
घर की ज़मीन पर चाँद–तारे उकेरतीं,
छोटी–सी चोटी, बड़ी–सी हँसी–
हर कोना उसके क़दमों से महकता ।
माँ की गोद उसका आसमान,
पिता की उँगली थामे
वो दुनिया की सैर करती ।
गुड़ियों के घर बनाते–बिगाड़ते
वो खुद समझ नहीं पाती –
कि वो ही इस घर की
सबसे प्यारी तस्वीर है ।

समय ने पंख दिए,
तो उसने किताबें थाम लीं ।
कभी माँ देर रात तक जागकर
उसका सिर सहलाती,
कभी पिता चुपके से
उसकी मेज़ पर लाइट ठीक कर जाते ।
वो हर जीत के साथ
दो मुस्कानें बाँटकर आती –
एक माँ की आँसू में,
एक पिता के गर्व में ।

जवानी की राहों पर
वो धीरे–धीरे खुद को पहचानने लगी ।
उसकी आँखों में लक्ष्य की लौ थी,
दिल में भरोसे की दीपशिखा ।
माँ उसकी सखी बन गई,
उसके मन की हर उलझन पढ़ लेती;
और पिता उसे यूँ देखते
जैसे कोई अपनी धड़कन को
बड़े होते हुए देख रहा हो ।

फिर एक दिन
उसकी हथेलियों पर मेहंदी उतरी –
जिसमें घर–आँगन की यादें
गहरी लकीरों–सी बस गईं ।

माँ ने उसे दहलीज़ पर रोका,
आँखों में हजारों दुआएँ थीं ।
पिता ने कन्यादान करते हुए
खुद को ही किसी को सौंप दिया ।
उसी पल समझ आया –
बेटियाँ विदा नहीं होतीं,
थोड़ा–सा दिल साथ लेकर जाती हैं ।

जब उसने पलटकर
आँखों में आँसू लिए कहा –
''माँ बाबा चलूँ ?''
तो घर की दीवारें भी गूँज उठीं ।
पिता की उँगली से छूटा
वो नन्हा–सा हाथ,
अब उम्रभर दिल में थमा रहता है ।
और माँ के आँचल में
सब अनकहे शब्द
मोती बनकर लुढ़क गए ।

वो पिता की पहली धड़कन,
उनकी आख़िरी चिंता –
उसके कदमों से चलना सीखनेवाला
वही पिता
अब उसे उड़ते हुए देखकर
कभी गर्व से भीग जाता,
कभी डर से ।
पर हर समय उसके पीछे
एक अदृश्य सुरक्षा–सा साया–
वो पिता ही होता है ।

माँ और बेटी का प्रेम
कोई रिश्ता नहीं,
एक आत्मा के दो हिस्से हैं ।
बेटी माँ की दुआओं का रूप,
माँ बेटी का आईना ।
एक रोए, तो दूसरी का दिल टपकता,
एक हँसे, तो दूसरी फूल–सी महक
उठती ।

बेटी सिर्फ जीवन का एक पृष्ठ नहीं –
वो सम्पूर्ण किताब है ।
कभी मधुर गीत,
कभी स्नेह की नदी,
कभी हौसलों की उड़ान,
कभी प्रेम की परछाई ।

वो जन्म ले –
तो घर रोशन होता है ।
वो बड़ी हो –
तो सपने जगते हैं ।
वो जाए –
तो आँगन की हवा भी संभलकर
चलती है ।

सच में, बेटियाँ
ईश्वर की लिखी
सबसे सुंदर कविता हैं ।

हॉर्न बजाना

– श्री. टी एन सी श्रीधर,
बंगलूरु, कर्नाटक

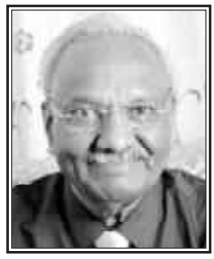

गाड़ी चलाते समय हॉर्न बजाना किसी का शौक हो सकता है ।
कई तरह के हॉर्न होते हैं, कुछ तेज़, कुछ मध्यम ।
कुछ की आवाज़ बिल्ली जैसी, कुछ की भैंस जैसी,
कभी-कभी संगीत की अलग-अलग धुनों जैसी...1

कुछ लोग ध्यान आकर्षित करने के लिए हॉर्न बजाते हैं,
कुछ जल्दी निकलने के लिए हॉर्न बजाते हैं,
कुछ मज़ाक में हॉर्न बजाते हैं,
कुछ आदत के चलते बिना वजह हॉर्न बजाते हैं...2

अगर मैकेनिक ब्रेक ठीक न कर पाए तो
तो हॉर्न और तेज़ कर देते हैं ।
कुछ लोगों ने दोपहिया वाहन में ट्रक का हॉर्न लगवा देते है, कभी-कभी हॉर्न बजाने का कोई कारण नहीं होता...3

जब भी कोई बिना कारण के हॉर्न बजाए,
तो उसे बर्दाश्त किया जा सकता है, अगर नहीं तो उन्हें चेतावनी दें,
फिर भी अगर हॉर्न बजाना बंद न हो,
तो ऐसे ड्राइवरों को सुधारा नहीं जा सकता है,
जीवन में ऐसे कई नमूने मिलेंगे कितनों को सुधारोगे...4

पूर्ण विराम...

– श्री. मनोज
शाह 'मानस',
नई दिल्ली

कभी-कभी
मेरी कविताएँ
जिंदगी की आशाएँ
इतनी अधूरी लगती है
जैसे उसे...
पूर्ण विराम नहीं मिलती
पूर्ण आराम नहीं मिलती...

जानते हो... !
ऐसी कविताएँ
मेरी आशाएँ
मैं हो जाता हूँ... !!
अधूरा... ! अपूर्ण... !!
प्रेम... तुम्हारे बिना
जीना भी क्या जीना

तुम जो अपने प्रेम के
कोष्टक में आलिंगनबद्ध लो
तो जीवन की कविताओं को
पूर्ण विराम मिले
और जिंदगी की आशाओं को
पूर्ण आराम मिले... !

जीत होगी तेरी दमदार

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

सत्य के पथ पर हो अग्रसर,
बढ़े जा तू कर्मों के रथ पर,
अपने सपनों को दे विस्तार,
हौसलों की बुलंद उड़ान भर ।

निराशा को पूर्णतः नकार कर,
आत्मविश्वास का कर संचार,
परिश्रम की तीव्र हुँकार भर,
लक्ष्य विजय श्री साकार कर ।

ईश्वर को कर प्रतिदिन नमस्कार,
रोम-रोम में आनंद प्रवाह कर,
साथ लेकर चल अपना परिवार,
खुद में खुशियों का उत्साह भर ।

अपनी प्रतिभा पर कर विचार,
तुझमें बसा अनुपम कलाकार,
कदमों को दे दिशा संग रफ्तार,
तू है सक्षम सुंदर सृजनकार ।

मीठी वाणी प्रेम की रसधार,
गुणवान को पूजता है संसार,
ज्ञान कौशल को बना आधार,
फिर जीत होगी तेरी दमदार ।

जनक नंदिनी

– श्री. आर्यावर्ती सरोज 'आर्या',
लखनऊ, उ.प्र.

जनक लली तू खूब फली
* मिथिला की फुलवारी में सुख, वैभव, उल्लास, संपदा
मिला जनकपुर क्यारी में ।

थी प्रसन्नता अनुगामिनी
हर्ष-संपदा अनुचर कामिनी
मिथिला की मैथिली सिया
जनक नंदिनी विदेह सुता ।

श्री युत सीता-राम स्वयंवर
आए ऋषि रूप कुंअर धर
सिया ने उमा से माँग लियावर
खंडित किया धनुष-धनुर्धर ।

जनकपुरी छोड़ जब आई
कौशल्या सम माता पाई
बदा न था सुख कुछ जीवन में
चली कुमारी राम संग वन में ।

दुर्भाग्य आया चलकर
सिया को ले गया हर कर,
राम ने तब पौरुष दिखलाई
लंका जीत सिया ले आई ।

राम अवध में तुम हो बन में
यह कैसे-कैसे हैं निष्ठुर माया
अग्नि परीक्षा देकर भी
अरण्य तेरे ही अंश आया ।

मेरा देश

– श्री. रीता सिंह,
बेंगलुरु, कर्नाटक

मेरा देश खिला है विविध पुष्पों से
कोई इनको तोड़ रहा है आज ।
धर्मों के बीच बढ़ाकर शत्रुता
बना रहा है कोई अपने काज ।।
कहीं दंगे करवाता है कोई
अपनों पर जुल्म ढाता है कोई ।
कहीं लगाकर आग कोई
खुद ही लगा रहा है आवाज ।।
बन के रहते थे कभी भाई-भाई
देखो दरार रिश्तों में अब आई ।
न आना किसी की बातों में
छुपे हैं यहाँ बहुत से दगाबाज ।।
ये देश है वीर जवानों का
कम न उनको कोई मानो ।
भारत माता की खातिर पहन लेते
कफन को समझकर ताज ।।
विवेक से ही काम लो सब
ढूँढो दोस्त में छुपे शत्रु को अब ।
बहुत हो चुका खेल नादानी का
नहीं बज सकता फटा हुआ साज ।।
भारत की पुण्य मिट्टी में हम जन्मे हैं
यहाँ छुपा हुआ देश प्रेम मन में है ।
बच्चों को भी सिखाओ राष्ट्र प्रेम
धरोहर हैं भविष्य के बच्चे आज ।।
जिस घर में वातावरण अच्छा होगा
पूत वही राष्ट्र भक्त सच्चा होगा ।
घर से समाज, समाज से राष्ट्र
राष्ट्र से विश्व में फ़िर चमके ताज ।।

भोले की ही माया

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी
'राम', इन्दौर, म.प्र.

तन-मन मेरा हुआ बावरा,
भोले के संग चलने से,
मजा नहीं है जीवन का,
बस एक जगह ही रुकने से ।
तन-मन मेरा...
ऐसा-वैसा कहीं नहीं है,
जैसा भोले को देखा,
जीवन है बंधन की माया,
भोले की है एक रेखा ।
तन-मन मेरा...
सत्य पकड़ कर जो भी चल दे,
जीवन उसको भाया है,
जो भी यहाँ-वहाँ घटता है,
भोले की ही माया है ।
तन-मन मेरा...
मनका-मनका, कंकर-कंकर,
दोनों में कोई भेद नहीं,
मुस्काते हैं दोनों मिलकर,
जब आ जाते हैं शंकर ।
तन-मन मेरा...
इसका-उसका छोड़ दें सारा,
मुस्कानों की बात करें,
आ जाएँगे भोले शंकर,
प्रेम की हम बरसात करें ।
तन-मन मेरा...

गहरा सच

– डॉ. अशोक, पटना, बिहार

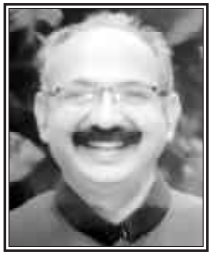

चुप्पी बोलती है
भीड़ के शोर में
सच अकेला
ओस की बूँद
सूरज से पहले
आईना बनती
सूखे पत्ते
हवा से पूछते
जड़ें कहाँ
रात का दीपक
अंधेरे को नहीं
डर को जलाता
टूटी राहें
पैरों से नहीं
हौसले से चलती
नदी का मौन
पत्थरों को भी
संवाद सिखाता
खामोश सच
समय के हाथों
अमर हो जाता

हाइकु

– डॉ. मंजुमणि शइकीया,
लक्षीमपुर, असम

1.बच्चे हमारे
धरोहर बनेगा
परिवेश दो ।

2.कक्षा में बैठे
उज्जवल भविष्य
सही शिक्षा दो ।

3.विनम्र बनो
शिखर नजदीक
अपने आप ।

4.श्रद्धावान हो
आसानी से मिलेगा
ज्ञान की ज्योति ।

5.आवाज उठा
सही समय पर
राह मिलेगा ।

सरस्वती वंदना

– डॉ. कृष्णा मणिश्री,
मैसूर, कर्नाटक

माँ तुझे नमन है
चरणों में वंदन है

श्वेत वस्त्र तू धारती
हम पर जय वारती
माँ तुझे नमन है...

हम अबोध अज्ञानी
ज्ञान से तू पखारती
माँ तुझे नमन है...

बुद्धि विवेक से भरो
दुख संताप सब हरो
माँ तुझे नमन है...

तेरी छाया में पले
जयी और विजयी बने
माँ तुझे नमन है
चरणों में वंदन है...

दिलों में प्यार भरो ।
सबसे प्यार करो ।

अटल बिहारी वाजपेयी जी को समर्पित कविता

– एडवोकेट
डी.के.कनौजिया,
दिल्ली

अटल थे आप नाम की तरह,
विचारों में गंगा–सी पवित्र धारा थी ।
शब्द जब संसद में उतरे आपके,
राजनीति भी कविता बन जाया करती थी ।
तलवार नहीं, संवाद आपकी शक्ति था,
विरोध में भी मर्यादा का दीप जलता रहा ।
कठोर समय में भी लोकतंत्र के आँगन में
आपने सदैव संयम का बीज बोया ।
कवि का हृदय, राजनेता का विवेक,
और राष्ट्र के लिए निस्वार्थ समर्पण
आपके व्यक्तित्व में घुलकर
भारत की आत्मा को स्वर देते रहे ।
जब सीमा पर सन्नाटा बोलता था,
आप शांति का संदेश लेकर चले ।
बसें चलीं, हाथ बढ़े,
इतिहास ने एक सजग प्रयास लिखा ।
आज भी शब्द आपके पथप्रदर्शक हैं,
विचार दीपक बन अंधेरे में जलते हैं ।
आप गए नहीं
आप राष्ट्र की चेतना में अटल हैं ।

सुहानी सुबह

– श्री. शालिनी श्रीवास्तव
'सनशाइन', गोरखपुर, उ.प्र.

हर सुबह सुहानी हो जाए
उम्मीद की कलियाँ खिल जाएँ ।
बिखरे जब सूरज की लाली,
घर–घर में लाए खुशहाली ।
सुहानी सुबह के स्वप्न सजा,
जीवन पथ पर बढ़ते जाएँ ।
आशा की किरणें सजी रहें
उमंग हृदय में जगी रहें ।
इस नई सुबह का स्वागत कर,
इस नए वर्ष का स्वागत कर ।
हर राह नई, मंजिल हो नई,
जीवन में भरी हो उमंग नई ।
खुशियाँ बरसें, नव स्वप्न सजें,
नवरंग बिखेरे यह जीवन ।
सरगम गुंज्जित दिशाएँ हो,
साकार सब कल्पनाएँ हों ।
रौशन हो मन का हर कोना,
जब भोर सुहानी अपनी हो ।
ईश्वर का फिर वरदान मिले,
सफलता की नई कहानी लिखें ।

बसंत गीत

खुशबुओं के मेले

– श्री. अशोक आनन, शाजापुर, म.प्र.

रात महकने लगीं–
दिन दहकने लगे ।
बागों में आकर –
अब ऋतुराज ठहरे ।
खुशबुओं के –
उनके घर मेले भरे ।

कलियों को देख अब –
मन बहकने लगे ।
भौंरों का हुजूम –
उमड़ पड़ा बाग़ में ।
कहीं झुलस न जाएँ –
तितलियाँ आग में ।

कोयल के मधुर स्वर –
फ़िर कुहुकने लगे ।
चम्पा, चमेली –
जूही के साथ आज ।
अमलतास , पलाश –
कचनार रहा नाच ।

हवा के घुँघरू –
छम–छम खनकने लगे ।
मधुमास की मस्ती से –
अब मन मस्त हुआ ।
रंगों की फुहारों ने भी –
अंग–अंग छुआ ।

उर में प्यार के –
पंछी चहकने लगे ।

अकेला रह नहीं पाता

– श्री. विजय कनौजिया, जनपद, उ.प्र.

डाकिया अब कोई पाती
तुम्हारी क्यों नहीं लाता
लाख करता हूँ कोशिश मैं
अकेला रह नहीं पाता
मिलन की आस लेकर
आज भी बैठा हूँ मैं लेकिन
मगर अब आजकल कोई
यहाँ मिलने नहीं आता... ।।
चहकती थीं कभी चिड़ियाँ
तो मैं संगीत बुनता था
पिरोने को पुष्प माला
सुगंधित पुष्प चुनता था
आँखें पलकें बिछाए
देखती हैं आज भी रस्ता
कोई खुशियों के आँसू अब
यहाँ देकर नहीं जाता... ।।
मुझे है फ़िक्र उनकी
आजकल किस हाल में होंगे
ना जाने कौन–सी रंगत
और किस चाल में होंगे
उन्हें शायद मिला होगा
कोई अब और मनुहारी
''विजय'' मुझको तुम्हारे बाद
कोई अब नहीं भाता... ।।
विजय मुझको तुम्हारे बाद
कोई अब नहीं भाता... ।।

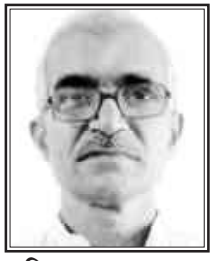

गीत

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

बगिया का बसन्त बौराया
फिर भी साजन पास न आया
अमराई में फूली सरसों
कोयल कूकी डाली डाली
छायी नयनों में मादकता
अंग-अंग से फूटी लाली
पूरी बदल गई है काया
मस्त मलय ने गीत सुनाया
बगिया का बसन्त बौराया
फिर भी साजन पास न आया
अंगड़ाई लेकर फूलों ने
नदियों के निर्मल कूलों ने
अलसाई धरती का आंचल
हिला-हिला कर झूलों ने
पपीहा को है आज जगाया
जिसने पिउ का गीत सुनाया
बगिया का बसन्त बौराया
फिर भी साजन पास न आया
झोली निकली है गुलाल की
चढ़े कन्हैया लाल पालकी
राधा खड़ी खड़ी मधुवन में
राह देखती नन्द लाल की
सखियों ने है रास रचाया
बिन सावन के मोर नचाया
बगिया का बसन्त बौराया
फिर भी साजन पास न आया
किसी हाथ में है पिचकारी
किसी राग में है सिसकारी
बिना कृष्ण के आज द्रौपदी
घूम रही है मारी-मारी
राज दुशासन का है छाया
अन्त धर्म राज का आया
बगिया का बसन्त बौराया
फिर भी साजन पास न आया

विमोहा छन्द

– डॉ. राजश्री तिरवीर, बेलगाँव, कर्नाटक

आइये साथियो,
गाइये साथियो ।
पूजिये राम को,
वक्त दो काम को ।
काम निष्काम हो,
दान को दाम हो ।
दूध हो गाय का,
संग हो न्याय का ।।
बेटियाँ हों सुखी,
हो न कोई दुखी ।
देश ऐसा बने,
भक्ति तम्बू तने ।।
छद्म के वेश को,
मात्र ही क्लेश हो ।
व्यक्ति में मेल हो,
प्रीति का खेल हो ।।

गज़ल

– श्री. केशव शरण, वाराणसी, उ.प्र.

चोट वाला निढाल मिलता है
दूसरे को उछाल मिलता है
सब बमों में ज़फ़ा–दग़ाओं के
प्यार का इस्तमाल मिलता है
मैं इसी इन्तज़ार में रहता
कब हमारा खयाल मिलता है
हुस्न की इक नज़र पड़ी जिस पर
हो गया वो निहाल मिलता है
कर लिया इन्तज़ार पकने का
इक न फल डाल–डाल मिलता है
ये ग़नीमत कि आज अपनों का
ग़ैर से हाल–चाल मिलता है
ख़्वाब अब तक न हो सका पूरा
साल के बाद साल मिलता है
उड़ गया जिस्म आशनाई का
बम दिया फोड़ बेवफ़ाई का
सिर्फ़ चेहरा सियाह करती है
अब यही काम रोशनाई का
गोपियों की तलाश करता हूँ
आज भी दिल लिए कन्हाई का
ख़त्म होगा विसाल होगा जब
क्योंकि ये दर्द है जुदाई का
लोग इसको शराब कहते हैं
काम जो कर रही दवाई का
दम जुटा इश्क़मंद दिल करता
सामना हुस्न आतताई का
एक कम्बल नहीं मयस्सर है
और मौसम गरम रज़ाई का

माँ

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज, लखनऊ, उ.प्र.

जीवन के कठिन मार्ग का हल होती है माँ ।
जीवन के सुंदर तरुवर का फल होती है माँ ।
भविष्य के मीठे सपनों का कल होती है माँ ।
गंगा से भी पावन उज्जल जल होती है माँ ।

तेरा रिश्ता सबसे पावन होता है अम्मा ।
तेरे बिन अब मेरा दिल रोता है अम्मा ।
मेरे जीवन बाधा में अड़ के खड़ी रही ।
तेरे न होने पर सबकुछ खोता है अम्मा ।

माँ की आँखें भर भर कर ममता लुटाती है ।
देती इतना प्यार प्यार की प्यास बुझाती है ।
उनकी आँखों में हमको समुंदर दिखता है ।
जहाँ स्नेह की नदियाँ आकर मिल जाती है ।

माँ से ही मिला था हमें जीने का सम्मान ।
माँ का साया जब उठा रूठ गया भगवान ।
घर का उजाला थी जीवन का सहारा थी ।
उसी के तन से आई थी मेरे तन में जान ।

माँ तू नहीं तेरा आशीष मेरे साथ है ।
मुझे जीवन देने में बस तेरा हाथ है ।
आज भी लगता है तू यहीं कहीं है ।
जो भी मेरे पास वो तेरी सौगात है ।

रुह की पुकार

– डॉ. अंजू अग्रवाल 'केशवी'

माँ !
क्या आप
मेरी–
रुह की आवाज,
सुन रही है न ।
अगर हाँ –
तो फिर जब आप,
मुझे पुकारती हो ।
तो लगता है कि –
आप यहीं–कहीं,
मेरे आस–पास ही है ।
वह पुकार मेरे अन्तस में,
गहरे तक पैठ जाती है ।
क्या हुआ !
अगर मैंने आपके –
गर्भ से जन्म नहीं लिया ।
पर आपको अपनी –
आत्मिक माँ तो माना है न !
यही तो –
बड़प्पन है आपका –
कि मुझे बिना देखे ?
बिना जाने –
यूँ मुझे अपनाया ।
मेरे अनदेखे प्यार को –
अपने गले लगाया ।
जब–जब भी आप,
प्यार से !
मुझे बेटा कहकर,
पुकारती है ।
सच मानना माँ –
मैं आपकी पवित्र,
और –
सुखद अनुभूति में डूब जाती हूँ ।
अपना –
यह स्नेहाशीष,
और निश्छल प्यार,
यूँ ही सदैव –
मुझ पर बनाये रखना ।
यही दुआ है मेरी ।

चाहिए

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

एक सकारात्मक मन
एक संस्कारी के गुण
बस यही चाहिए हाँ
बस यही चाहिए मुझे ।
आदतें तुम बदलो अब से
छीनना सीखो तुम अवसर
जीवन उसे बदलो अब से
कर लो अब एक आरंभ ।
फूल हो या फिर काँटे
कदम रखो उत्साह सहित
चुनौती को हराओ हर दिन
जिम्मेदारी व उम्मीद सहित ।
थोडा हिम्मत मन में भरो
थोडा परिवर्तन कर्म में करो
जीवन में विजय हाँ विजय
बस यही चाहिए यही चाहिए ।

बेरोजगार

– श्री. निधि कुमारी,
मुजफ्फरपुर, बिहार

जब किसी बेरोजगार पुरुष से
कोई पूछता है
''आप करते क्या हो ?''
आसमान ऊपर से ऊपर
और जमीं धँस जाती है
एक मुट्ठी नीचे
जैसे धँसती है ''लड़कियों के जनमने'' पर
या उससे भी ज्यादा
यहाँ मौन की भाषा
समझते है सिर्फ बेरोजगार
जो करते हैं माँ–बाप, पत्नी,
बच्चे और धरती सेवा
लेकिन वह कह नहीं पाता
उस स्त्री की तरह
जो ऐसे सवालों पर
बेवाकी से जाती है
चल कोई नहीं
मैं 'हाऊस वाइफ' हूँ
कोई दिक्कत है तुम्हें
लेकिन
वह कह नहीं पाता
''हाऊस वाइफ'' की जगह
मैं ''हाऊस हस्बैंड'' हूँ
शायद अभी तक
सामाजिक शब्दकोश में
''हाऊस हसबैंड'' को एक्सेप्टेंस नहीं
शायद उसे भी गवांरा नहीं
विशेषाधिकार तर्पण में
समरस सामंजस्य अर्पण में ।

विद्या उत्सव के सफलतापूर्वक संपन्न होने पर आपके संग आपकी पूरी टीम को और सभी विजेताओं को हमारी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ !

– डॉ. जमुना कृष्णराज, चेन्नै, तमिलनाडु

श्रीधर जी सादर नमन आप बहुत सराहनीय कार्य कर रहे हैं । प्रभु आपका कल्याण हर तरह से करेंगे । जय सियाराम जी

– डॉ. अशोक कुमार तिवारी, अयोध्या, उ.प्र.

वंदनीयम । वाणीधर सम्मान से सम्मानित समस्त विभूतियों को हार्दिक बधाई । शबरी शिक्षा संस्थान का यह प्रयास अतुलनीय है । और इसके लिए संस्थान बधाई का पात्र है । संस्थापक के रूप में आपके योगदान को कम कैसे आँका जा सकता है । स्तुत्य संचालन के लिए आपको बधाई सह हार्दिक शुभकामनाएँ ।

– श्री. नवल किशोर सिंह, तिरुच्चि, तमिलनाडु

सादर नमस्कार । आदरणीय । अत्यंत आभारी हूँ कि आप सदैव मुझे पत्रिका पढ़ने हेतु उत्साहित करते हैं । पत्रिका की सबसे सुंदर और महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए आपको हार्दिक बधाई ।

– श्री. अनिमा दास, कटक, ओड़िशा

बहुत सुंदर अंक ! शानदार कवरेज़ लाज़वाब प्रस्तुति... संपादकीय टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ जी ।

– श्री. सूबेदार रावत गर्ग उण्डू 'राज',
बाड़मेर, राजस्थान

नवांकुर

गणतंत्र दिवस

– अद्विका राउत,
तृतीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

गणतंत्र दिवस जैसा शुभ दिन है आया
ढेर सारी पुरानी यादें लाया,
लोगों ने खुद शासन चलाया,
वोट देकर अपना कर्तव्य निभाया ।

डॉ. बी.आर अम्बेडकर
है संविधान के रचयिता
थमा दिया जिन्होंने हथेली पर
संविधान की महागाथा ।

आओ हम सब मिलकर
सोने सा भारत बनाएँ,
भारत माता की आज गरिमा बढ़ाएँ ।
आओ अपने अंदर प्यार को जगाएँ
सब होकर एक बुराई के आगे
डट कर खड़े हो जाएँ ।

इस देश की धरती में सच्चाई का
बीज बोएँ
हमारी प्यारी भारत माता की आन,
मान और शान बढ़ाएँ ।
अलग है धर्म पर एक ही माँ
अपना भारत देश महान ।

है तिरंगा प्यारा

– ईमानुएल बेहेरा,
तृतीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

है सबसे न्यारा
यह देश हमारा
जग में प्यारा
छब्बीस जनवरी का दिन है आया
खुशियों को साथ ले आया
इसी दिन लागू हुआ संविधान
जिसका पालन करना है हमारा सम्मान
यह देश हमारा
जग में प्यारा
आओ लगाएँ, जयहिन्द का नारा ।

आज़ादी का रंग

– हमसिका कुमारी,
तृतीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

है गणतंत्र दिवस
राष्ट्रीय पर्व हमारा
आओ मिलकर मनाएँ
आजादी का रंग नया
फिर से आँखों पर छाया
वीरों का बलिदान
शहीदों का कफ़न है तिरंगा
हर भारतीय की जान तिरंगा ।
आओ मिलकर मनाएँ
आज़ादी का रंग नया ।

26 जनवरी आया

– आराध्या राज,
तृतीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट
स्कूल, कटक, ओड़िशा

गणतंत्र दिवस है आया
चारों ओर खुशियाँ फैली
छोड़कर अँग्रेजों की गुलामी

आया अपना नया संविधान
हर पल इस दिवस का करो सम्मान

भारतवासी जहाँ भी रहते
कर सर ऊँचा अपना तिरंगा लहराते ।

गणतंत्र दिवस

– अमृता राज,
पाँच कक्षा, न्यू स्टेवार्ट
स्कूल, कटक, ओड़िशा

गणतंत्र दिवस है आया
खुशियों का झंडा लहराया
आओ मिलकर दें उन्हें सम्मान
जिन्होंने बचाए हमारे प्राण
महात्मा गाँधी, सुभाष बोस
न था इनका कोई दोष
पर था इनको देश से प्यार
इसीलिए गई उनकी जान ।
हम सब हैं अभी साथ
पकड़ कर एक दूसरे का हाथ
क्योंकि था यह उनका बलिदान
जो हमें मिला है जीवन दान ।

स्वर्णिम हिन्दी

– साई अमृत महापात्र,
पाँच कक्षा, न्यू स्टेवार्ट
स्कूल, कटक, ओड़िशा

हिन्दी भाषा है
सभी भाषाओं में महान
जिसका सब करते आदर
स्वर्ण के समान
इस भाषा में मुझे है होता
ममता का एहसास
जिसके एक एक अक्षर में
भरी है मिठास
जिस भाषा को सुनने से
होता है मुझे अपनेपन का आभास
वह हिन्दी भाषा लगती है
मुझे सबसे खास
हिन्दी पढ़ने से मन को
मिलता है संतोष
यह भर देती है
आत्मा में जोश
हिन्दी होती है
बहुत ही आसान
जो ले आती है
चेहरे पर मुस्कान
हिन्दी है हमारी
पहचान और राष्ट्रभाषा
जिसके लिए हम
गर्व करते रहे हमेशा ।

गणतंत्र दिवस

– साई अमृत महापात्र,
पाँच कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

1848 में हुआ भारत में अँग्रेजों का आगमन
जब था उनका बस व्यापार में मन
क्योंकि कमाना था उन्हें अधिक धन
लेकिन धीरे-धीरे वह करने लगे भारत पर शासन ।

उन्होंने किया भारत पर अत्याचार
और बनाए बहुत ही अन्यायपूर्ण कानून
लेकिन जब भारतवासियों ने किया उनसे युद्ध
बह गया हज़ार हज़ार भारतीयों का खून ।

इस युद्ध के बाद सभी भारतीयों के
मन में आया एक विचार
कि अगर हो एकजुट करें अँग्रेजों पर वार
न मानकर अपनी हार
तो कभी न कभी खुल जाएगा
उनकी स्वाधीनता का द्वार ।

ए.ओ. ह्यूम ने किया कांग्रेस का निर्माण
जिसका उद्देश्य था भारत में
करना एकता का प्रचार
और अँग्रेज़ सरकार को
दिलाना उनके प्रति ध्यान
ताकि आ सके भारतीयों के
जीवन में कोई सुधार ।

15 अगस्त को हुआ भारत एक स्वाधीन देश
जिस दिन को माना जाता है सबसे विशेष
दूर हो गए सभी भारतीयों के क्लेश
और चले गए भारत से अँग्रेज़ विदेश ।
अब भारत में होनेवाला था
भारतीयों का न्यायपूर्ण शासन
जो बनाना चाहते थे भारत में अच्छे नियम
जो थे बुरे लोगों के लिए खराब
पर बना दे अच्छे लोगों का जीना उत्तम ।

26 जनवरी को हुआ
भारत एक प्रजातंत्र देश
लागू हुआ अंबेडकर का लिखा संविधान
इस दिन को मनाते हम गणतंत्र दिवस
जो है भारत के इतिहास में सबसे महान ।

बस प्यार के लिए

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै, तमिलनाडु

बस प्यार के लिए
बस प्यार के लिए
जिया करो जग में
बस प्यार के लिए ।
एक सुंदर याद रचने को
कभी हँसी, कभी तकरार
कभी आँसू, कभी संभालना
पल हर पल बस प्यार के लिए ।
प्यार परिभाषित करता है
प्यार आकार देता है
प्यार बास्तविकता देता है
जियो बस प्यार के लिए ।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितानि अभिरुचितानि अनूदितानि ।

हृदयस्य दृढनिश्चयः एव वास्तविक प्रतिभा ।

बहुवर्षपूर्वं संयुक्तराज्यस्य अपीलन्यायालये एकः प्रकरणः श्रूयते स्म । यस्याः बाहू पादौ वा नासीत्, तस्याः माता राज्यसर्वकारः स्वस्य 10 मासस्य शिशुं तारयितुं न शक्नोति इति निश्चयं कृतवती आसीत् । माता न्यायालयं गता यत् सा शक्नोति इति सिद्धं कर्तुं शक्नोति । यदा प्रकरणम् आरब्धम् तदा न्यायालये माता यत् कृतवती तत् सर्वान् स्तब्धं कृतवान् । अधरजिह्वा एतेषां च साहाय्येन बाहू पादौ न विद्यमाना माता पुरतः शयितानां शिशुस्य वस्त्राणि अपसारयित्वा पुनः नूतनवस्त्रेषु स्थापयति स्म । सा शिशुं आवश्यकं भोजनं पोषयति स्म । इति दृष्ट्वा न्यायाधीशाः आसनात् उत्थाय मातरं प्रणम्य । तदा ते अवदन्, ''धन्यवादः यत् अस्मान् सर्वान् अवगन्तुं कृतवान् यत् तेषां शारीरिकक्षमता वस्तुतः तेषां हृदये यत् दृढनिश्चयं भवति तस्मात् यथार्थप्रतिभायाः अल्पभागः एव अस्ति । सर्वेषां दोषाः, अपूर्णताः च सन्ति । यदि वयं स्वदोषान् वर्धयामः तर्हि ते अस्माकं मनसि अधिकं तिष्ठन्ति । अतः अस्माकं दोषान् अपेक्ष्य चिन्ता न कृत्वा साहसेन कार्यं कुर्मः ।

भवान् गरुडः वा काकः वा ?

काकः गरुडस्य उपरि उपविश्य तुण्डेन तस्य कण्ठे दंशति । परन्तु गरुडः स्वसमयशक्तिं अपव्यय्य न प्रतिकारं करोति । गरुडः केवलं पक्षं प्रसारयित्वा आकाशं प्रति उच्चैः उड्डीयमानः भवति । एतस्मिन् ऊर्ध्वतायां काकः थकित्वा अधः पतति च । काकैः सह स्वस्य बहुमूल्यं समयं अपव्ययितुं त्यजतु । अपि तु स्वस्य ऊर्ध्वतां यावत् गच्छतु । एकस्मिन् दिने, ते स्वयमेव अन्तर्धानं करिष्यन्ति । गरुडः काकः वा इति भवता निर्णयः करणीयः ।

प्रेमात् महत्तरं किमपि जगति नास्ति ।

एकदा मुद्गरः कुञ्जीम् अपृच्छत्, ''अहं भवतः अपेक्षया बलिष्ठः अस्मि, परन्तु मम तालं उद्घाटयितुं कष्टं भवति, परन्तु भवतः एतावत् शीघ्रं उद्घाटनं भवति'' इति । कुञ्जी अवदत्, ''त्वं मम अपेक्षया बलिष्ठः असि, अहम् अपि भवता सह सहमतः । त्वं तालस्य शिरः उद्घाटयितुं प्रहृतवान्, परन्तु अहं तालस्य हृदयं स्पृशामि ।''
अत्र मुद्गरः तालं भङ्क्तुं शक्नोति (बलेन), किन्तु क्षतिं करोति ।
कुञ्जिका तालं उद्घाटयति–अभङ्ग्वा, यथार्थरूपेण हृदयं स्पृशन्ती ।
इह प्रेमात् महत्तरं किमपि नास्ति इति अवगंतव्ययम् ।

தமிழமுது – நூல் பல கல்

– எம். ஸ்ரீதர்,
நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

கல்வி கரையில் கற்பவர் நாள் சில.... இவ்வுலகில் கற்க வேண்டியவை அளவிட முடியாத கடலைப் போன்று பறந்து விரிந்து கிடக்கக்கூடியவை. கல்வி என்பதன் பொருள் கற்றுத் தெளிவதாகும். ஏட்டுச் சுரக்காய் கறிக்குதவாது என்பது போல, நுனிப்பொருள் மெய்வது என்பதை நாம் அறிவது போல கல்வியை மிகவும் ஆழமாகவும் முழு மனதோடும் கற்றுக் கொள்ள வேண்டும்.

ஒரே விஷயத்தை ஒரே நிமிடத்தில் மேலோட்டமாக பார்த்து தெரிந்து கொள்பவர்களும் இவ்வுலகில் இருக்கிறார்கள். அந்த ஒரே விஷயத்தை ஆழ்ந்து அனுபவித்து ரசித்து ஆராய்ந்து உண்மை என்று தெளிபவர்களும் இவ்வுலகில் இருக்கிறார்கள். கற்றறிந்த பெரியோர்கள் தனது கல்வியையும் அனுபவத்தையும் உண்மையையும் தமது எழுத்துக்களால் நூல்களில் குறிக்கிறார்கள். இந்நூல்களை படிக்கும் போது நமக்கு பல கோணங்களில் பல உண்மைகள் பல தத்துவங்கள் பல விஷயங்கள் பல ஆச்சரியங்கள் பலவிதங்களிலும் புலப்படுகிறது. நூல் பல கற்பதால் நாம் நமது அறிவையும் என்ன ஓட்டத்தையும் திறம்பட மேம்படுத்தலாம். எனவேதான் நமது ஔவையார் **நூல் பல கல்** என்று கூறி மாணவர்த்தம் அறிவினையும் புலமையும் வளர்த்துக் கொள்ள அறிவுறுத்துகிறார்.

தொடரும்...

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें । अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திரு திலதைப்பதி

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

''விண்ணோர் வேதம் விரித்தோத
வல்லார் ஒருபாதமும்
பெண்ணர் எண்ணார் எயில்செற்
லுகந்த பெருமானிடம்
தெண்ணிலாவின் ஒளி தீண்டு
சோலைத் திலதைப்பதி
மண்ணுளார்வந் தருள்பேண
நின்றம் மதிமுத்தமே''

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் அருளிய
2-ஆம் திருமுறைப் பாடல்

இஷ்ட தெய்வ வழிபாட்டின் பலனையே நாம் பெறவேண்டுமானால் முதலாவதாக குலதெய்வ வழிபாட்டையும், அடுத்ததாக முன்னோர் வழிபாட்டையும் முறையாகச் செய்யவேண்டும் என்கின்றன அருள்நூல்கள். அவ்வகையில் முன்னோர்களுக்கு முக்தி அருளும் க்ஷேத்ரமாகவும், எந்நாளும் முன்னோர்களுக்கு சிராத்தம், பிண்டம் கொடுத்தல், தர்ப்பணம் செய்தல் முதலானவை செய்ய உகந்த நித்ய அமாவாசை க்ஷேத்ரமாக திகழ்வது திலதைப்பதி திருமுறை திருத்தலம் ஆகும். இத்தலம் மணிமுத்தம் என்றும் அழைக்கப்படுகின்றது. தற்போது திலதைப்பதி என்பது மருவி செதில்பதி, சிதலைப்பதி என்று இத்தலம் அழைக்கப்படுகின்றது.

அருள் வரலாறு :

முன்னொரு சமயம் ஸ்ரீராமர் இந்தத் தலத்தில் தமது தந்தை தசரதருக்குச் சிராத்தம் செய்து பிண்டம் கொடுத்தார். மேலும் சீதையை ராவணன் கடத்திச் சென்றபோது அவனிடம் போராடி அடிபட்டதோடு, சீதையை ராவணன் கவர்ந்து சென்ற செய்தியினையும் கூறி உயிர்விட்ட ஜடாயுவுக்கு அவர் இங்கே எள் கொண்டு தர்ப்பணம் செய்தார்.

ஆகையால் இத்தலம் முக்தீஷ்வரம் எனவும், திலதைப்பதி என்றும் அழைக்கப்படுகின்றது.

பிரமன் சாபம் நீங்கிய :

ஒருமுறை தேவர்கள் அனைவரும் ஸ்ரீ சிவபெருமானை வணங்கி வழிபட திருக்கயிலாயம் சென்றனர். அது சமயம் பிரம்மதேவனின் பார்வை விதிவசத்தால் ஊர்வசியிடம் சென்றது. இதனால் பூலோகத்தில் பிறக்கும்படி பிரம்மதேவனுக்கு சாபமிட்டார் ஸ்ரீ சர்வேஷ்வரன்.

சாபம் பெற்ற பிரம்மன் இத்தலத்தில் திருக்குளம் அமைத்து அதில் தினம் நீராடி ஸ்ரீ முக்தீஷ்வரரை வழிபட்டு சாப விமோசனம் பெற்று சத்யலோகம் சென்றார்.

மஹாலக்ஷ்மி :

ஸ்ரீ மஹாலக்ஷ்மி ஒருமுறை ஸ்ரீமந் நாராயணனை வழிபட வந்த குள்ள வடிவம் கொண்ட ரிஷிகளைப் பார்த்துச் சிரித்துவிட்டார். இதனால் கோபமடைந்த அந்த ரிஷிகள் ஸ்ரீமஹாலக்ஷ்மிக்கு ஸ்ரீமந் நாராயணனிடம் இருந்து நீங்கி பூலோகத்தில் பிறக்கும்படி சபித்தனர்.

ஸ்ரீமஹாலக்ஷ்மி இத்தலம் வந்து ஈசனைவழிபட்டு சாபம் நீங்கப்பெற்று மீண்டும் வைகுண்டம் திரும்பினார்.

நித்ய அமாவாசை க்ஷேத்ரம் :

சகாதேவன் அமாவாசையன்று களப்பலி கொடுத்தால் உமக்கே வெற்றி என்று துரியோதணனிடம் கூறியதால், அவனது வெற்றியைத் தடுக்க பகவான் ஸ்ரீ கிருஷ்ணர் அமாவாசைக்கு முதல் நாளே ஒரு குளக்கரையில் அமர்ந்து தர்ப்பணம் கொடுத்தார்.

இதனால் அதிர்ச்சியடைந்த சூரிய சந்திரர்கள் ஸ்ரீகிருஷ்ணரிடம் வந்து காரணம் கேட்டனர்.

அதற்கு ஸ்ரீ கிருஷ்ணர், ''அமாவாசை என்றால் என்ன ? சூரிய சந்திரர்கள் சேர்வது தானே நீங்கள் இப்போது சேர்ந்து இருப்பதால் இன்றே அமாவாசை'' என்றார்.

இந்த நிகழ்ச்சி நடந்த இடம் இந்த திலதைப்பதி எனத் தலவரலாறு கூறுகிறது.

மேலும் ஸ்ரீ கிருஷ்ணர் சூரிய சந்திரர்கள் இணைந்திருக்க அமாவாசை தர்ப்பணம் கொடுத்ததால், முன்னோர்கள் மோக்ஷம் செல்ல நாள், கிழமை, திதி பார்க்காமல் எல்லா நாட்களிலும் இங்கு சிராத்தம் செய்வது, தர்ப்பணம் கொடுப்பது நடந்து வருவதால் இத்தலம் நித்ய அமாவாசை க்ஷேத்ரம் எனவும் சிறப்பிக்கப்படுகிறது.

சிறப்புக்கள் :

1. மூலவர் ஸ்வயம்பு லிங்கம்.

2. இத்தலத்தில் கோயில் முன்பு ஸ்ரீ விநாயகர் மனித முகத்துடன் ஸ்ரீ ஆதிவிநாயகர் என்ற திருநாமத்துடன் காட்சி தருகிறார். இவர்முன் மட்டை தேங்காய் கட்டி ப்ராத்தனை செய்தால் நியாயமான கோரிக்கைகள் நிறைவேறும்.
3. இந்தத் திருத்தலம் நான்கு யுகங்களிலும் முறையே க்ருதயுகத்தில் மந்தாரவனம் என்றும், த்ரேதாயுகத்தில் ஹரி க்ஷேத்ரம் எனவும், த்வாபரயுகத்தில் பிரமநாயகம், கலியுகத்தில் திலதர்ப்பணபுரி என்றும் அழைக்கப்பட்டு வருகின்றது.
4. ஸ்ரீ ராமர் திலம்-எள் மூலம் இத்தலத்தில் தர்ப்பணம் செய்ததால் இவ்வூருக்குத் திலதர்ப்பணபுரி எனப் பெயர் வந்தது.
5. பாரத தேசத்தில் முன்னோர்களுக்குத் தர்ப்பணம் கொடுக்க உகந்த 7 தலங்களுள் இதுவும் ஒன்று. மற்றவை காசி, ராமேஷ்வரம், ஸ்ரீ வாஞ்சியம், திருவெண்காடு, கயா, ப்ரயாக்ராஜ் (அலகாபாத்) ஆகியவை ஆகும்.
6. ஸ்ரீ ராம லக்ஷ்மணர்கள் தசரதருக்கு பிண்டம் கொடுக்கும் காட்சியினைப் பிரகாரத்தில் காணலாம்.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ முக்தீஷ்வரர்
இறைவி	: ஸ்ரீ ஸ்வர்ணவல்லி
தலமரம்	: மந்தாரைச் செடி
தீர்த்தம்	: தேவி தீர்த்தம், பிரம்ம தீர்த்தம், சக்ர தீர்த்தம், வசிஷ்ட தீர்த்தம், சந்திர தீர்த்தம், அரிசிலாறு
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: ஸ்ரீ ராமர், லக்ஷ்மணர், பிரம்மா, மஹாலக்ஷ்மி, சூரியன், சந்திரன், யானை, சிங்கம்

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீஞானசம்பந்தப் பெருமான் இத்தலத்து இறைவனுக்குப் பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்துள்ளார்.

தரிசன காலம் :

காலை 06.00 மணி - பகல் 12.00 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி - இரவு 08.00 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ முக்தீஷ்வரர் திருக்கோயில்,
செதலபதி - 609 503.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

04366-228818, 230700 / 9442714055

அமைவிடம் :

மயிலாடுதுறை-திருவாரூர் பாதையில் பேரளத்திலிருந்து சுமார் 5 கி.மீ. தொலைவிலும், பூந்தோட்டத்திலிருந்து சுமார் 2 கி.மீ. தொலைவிலும் திலதைப்பதி திருமுறைத் திருத்தலம் அமைந்துள்ளது.

ஸ்ரீ ஸ்வர்ணவல்லி அம்பா ஸமேத

ஸ்ரீ முக்தீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.02.2026. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

शबरी परिवार से एक और भेंट

अक्षया हिन्दी पाठ्यपुस्तक

बाल कक्षाओं से पाँचवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए

आज ही खरीदें...
Get your copies now...

- मन भावन शैली
- सामाजिक मूल्यों पर आधारित
- सरल और ज्ञानवर्धक अभ्यास
- भाषा कौशल पर आधारित
- सृजन तथा चिंतना शक्तिवर्धक
- सरल तथा शुद्ध भाषा
- छात्रों में रुचि उत्पादक
- अभिभावक का प्रिय पुस्तक
- श्रेष्ठ अध्यापक का मन मोह पुस्तक

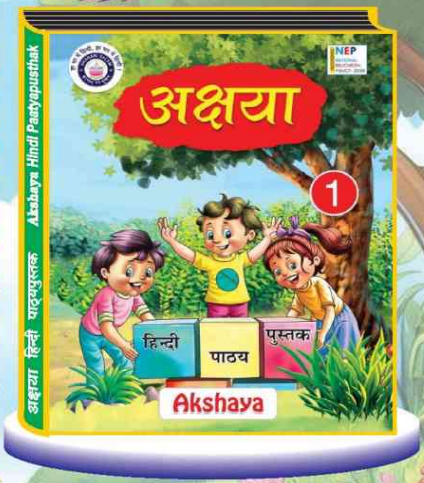

Shabari Book House proudly presents

Akshaya Hindi Paatyapusthak

a new series of Hindi third language books that inspire the learner

- Captivating storytelling
- Value-driven lessons
- Engaging book exercises
- Enhanced language proficiency
- Boosts creativity & critical thinking
- Lucid, effective language
- Sparks student curiosity
- Parent-friendly content
- The best teachers' Choice

Price

LKG	₹ 90/-
UKG	₹ 100/-
Std-1	₹ 150/-
Std-2	₹ 150/-
Std-3	₹ 150/-
Std-4	₹ 150/-
Std-5	₹ 150/-

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace"
194, Second Agraharam,
Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414,
98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/

Posted at Salem HPO 636 001. February-2026

Published on 5th February-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026
Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें।
அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.
Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Hindi Speaking Course

தமிழ் மற்றும் ஆங்கிலம் வாயிலாக

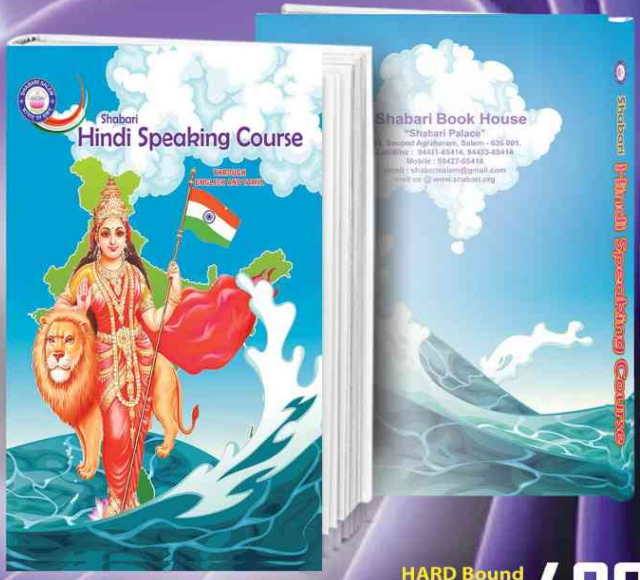

SOFT BOUND Just ₹300/-

HARD Bound Just ₹420/-

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace", 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414, 98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/